निज श्री कृष्ण परमात्मने नमः

श्री कृष्ण काव्यांजलि

रचियता
सद्धर्मरत्न कविवर विशाल

- प्रकाशक -
श्री कृष्ण प्रणामी परमानन्द धाम
इकदिल इटावा उ0प्र0 भारत

निज श्री कृष्ण पूर्ण ब्रह्म परमात्मने नमः

श्री कृष्ण काव्यांजलि

भजनमाला

-: प्रकाशक :-

श्री कृष्ण प्रणामी परमानन्द धाम

इकदिल 206126 इटावा (उत्तर प्रदेश) भारत

प्रथम संस्करण-
विजयाभिनन्दन बुद्ध शाखा - 341
वि0 सं0 - 2075
ई0 स0 - 2019
प्रतियाँ - 2000

प्राप्ति स्थान -
श्री कृष्ण प्रणामी परमानन्दधाम इकदिल 99274011410
सद्धर्मरत्न कविवर विशाल जी महाराज 8859903251
प0 छोटे लाल अवस्थी तिर्वा गंज कन्नौज 9554527827
श्री मनीष गोलवारा श्री धाम वृन्दावन मथुरा 8218710272

न्यौछावर - 25/-

लिपि सज्जा -
अर्पण समर्पण कम्प्यूटर्स
परमानन्दधाम इकदिल इटावा

प्रकाशक :-
श्री कृष्ण प्रणामी परमानन्दधाम
इकदिल - 206126 इटावा, उ0 प्र0 भारत
09837809898, 09927401140, 09548861410
email:- parmanandmaharaj@gmail.com
visit us:- www.parmananddham.com

दो शब्द

निजात्मन सुन्दरसाथ जी एवं भगवत प्रेमी -

सप्रेम प्रणाम,

श्री कृष्ण प्रणामी श्री मन्निजानन्द सम्प्रदाय के अन्तर्गत काव्य में सूर्य के समान रघुवंशीय क्षत्रिय शाक्य वंश में जन्मे सद्धर्मरत्न 'कविवर विशाल जी महाराज' ने हिन्दी काव्य रचना के अर्न्तगत आत्मा परमात्मा व परमधाम का वर्णन बड़ी ही सरलता से आध्यात्मिक तत्व का दिग्दर्शन कराया है! आपने प0 मोतीदास जी महाराज से तारतम महामन्त्र की दीक्षा लेकर उन्ही की प्रेरणा से परमात्मा श्री कृष्ण की पतिव्रता भक्ति में लीन रहते हुए प्रभु की लीला एवं परमात्म तत्व को काव्य के सौदर्न्य से विवेचित किया है।

परमात्मा श्री कृष्ण की लीलाओं में- मैया यशोदा का वात्सल्य, ग्वाल बालों संग सौहार्द भाव, गोपी जन राधामाधव माधुर्य लीला। आप की रचनाओं में ऐसा प्रतीत होता है कि विशुद्ध भक्ति से ओत प्रोत देखी हुयी लीलाओं का सजल नेत्रों से रसास्वादन कराते हों।

प्रस्तुत श्री कृष्ण काव्यांजलि में छन्द, कवित्त, दोहे, पद, सवैया, कुण्डलियाँ आदि काव्य रचनायें अलंकारित शब्दावली से समाहित है। परमधाम की ब्रह्मांगनाओं के साथ रासलीला का अखण्ड भक्तिमय विशुद्ध प्रेमरस (रसो वै सः) की झलक आपकी काव्य शैली में अनुकरणीय हृदय ग्राही है। इसमें संदेह नही है

मुहम्मद जायसी का गोरा बादल युद्ध और तुलसीदास द्वारा रचित रामचरित मानस की तरह लगभग बारह हजार दोहा चौपाई सोरठा छन्दों से युक्त एक विशाल ग्रन्थ श्री कृष्णानन्द सागर की रचना कर आपने अपने विशाल नाम का सार्थक रूप प्रकट कर दिया। आपकी और भी रचनायें जैसे दोहावली कृष्ण काव्यांजलि एवं श्री कृष्ण पुष्पांजलि आदि काव्य ग्रन्थों की रचना करने से रचनाकार सद्धधर्म रत्न कविवर विशाल जी को महाकवि विशाल कहना भी समीचीन होगा।इसमें कोई भी अतिसंयुक्ति नहीं होगी। इस घोर कलिकाल में परमात्मा श्री कृष्ण की अपार कृपा है जो कि आपकी कलम जगत कल्याण के लिये भक्ति काव्य रचना को रुकने नहीं देते हैं।

हमें पूर्ण विश्वास है जो भक्त सुन्दरसाथ श्रद्धा से पठन पाठन करेंगें वो अवश्य ही परमात्मा श्री कृष्ण के प्रेम भाजन होंगे। श्री कृष्ण काव्यांजलि के प्रकाशन में आचार्य अर्पण जी एवं आचार्य समर्पण जी का विशेष योगदान रहा है ॥सप्रेम प्रणाम॥

गुरुदेव स्वामी परमानन्द जी महाराज
के कृपा पात्र शिष्य
-डा0 नरेन्द्र कुमार सारस्वत
जनपद चिकित्सा अधिकारी
आगरा उ0 प्र0

समर्पण

नित्य ब्रह्मलीलालीन
प्रातः स्मर्णीय गुरूदेव
प0 मोतीदास जी महाराज

नित्य ब्रह्मलीलालीन
प्रातः स्मर्णीय गुरूदेव
पूज्य लाटबाबा जी महाराज

के
चरण कमलों में
सादर समर्पित

प्रणाम जी

- विशाल

विनय

गोपाल गोकुलधीश मजु, गोपेश गोपी बल्लभम्।
तन नीलगिर आतम् पर्‌यो, इमि पीत पटु पीताम्बरम्।
गलहार गुञ्जावतंश अंग, वैचित्र भूषण भूषितम्।
अधरान मृदु मुस्कान मंजुल, भक्त भव भय भंजनम॥

माथे मुकुट मयूर मंडित, परम मयं समाननम्।
नव कंज लोचन लोल कुण्डल, श्याम तन मन भावनम्।
वन्शी विभूषित पाणि प्रभु, कंकण विराजत छवि परम्।
निज दीन 'विशाल' जान जन, कीजै कृपा करुणा करम्॥

श्री कृष्ण आनन्द कन्द, गोकुल चन्द्र यशुदा नन्दनम्।
ध्यावहि सदा जेहि ध्यान धर, शिव शेष मुनि मन रंजनम्।
प्रकटे सोई प्रभु आयके, परब्रह्म पूरण रूपकम्।
धन्य भाग्य यशुदा नन्द के, ब्रह्म खेलता जिन मन्दिरम्॥

बलिहार कोटि काम छवि पर, रूप श्यामल सुन्दरम्।
उर माल भाल विशाल तन, सोहे परम पीताम्बरम्।
शोभा परम मुख मण्डलम्, शुभ नासिका अरु लोचनम्।
वन्शी विभूषित हस्त अरू, श्रवण सुन्दर कुण्डलम्॥

हरण भूतल भार प्रभु, खल दैत्य वंश निकन्दनम्।
कर धार गिरवर तुम लियो, अरु मान सुरपति मर्दनम्।
श्री रासेश्वरी मिल रास कियो, विहार वृन्दा काननम्।
करु वास मम उर आयके, निज राधिका नट नागरम्॥

बन्दहुँ पुरी नवतन सुखद, श्री देवचन्द्र सद्‌गुरु परम्।
श्री प्राणनाथ केशव सुवन, महामंगल ज्ञान स्वरूपकम्।
बन्दहुँ पुरी पद्मावती, छत्रशाल बर जहँ राजतम्।
कोटि बार 'विशाल' विनवहुँ, गुरू पावन पद पंकजम्॥

कुण्डलियां

स्वामी मेरे आत्मपति, अक्षरातीत सुनाम।
श्री राज श्यामा सहित, हृदय बसहु सुखधाम॥
हृदय बसहु सुखधाम, विनय मेरी सुन लीजो।
अपनो ही मम जान, बुद्धि मम निर्मल कीजो॥
मैं हूँ बुद्धि विहीन, ज्ञान दो अन्तरयामी।
कहत विशाल पुकार, टेर सुन लीजौ स्वामी॥

राधा हे रमण, कृष्ण चन्द्र बृजराज।
कठिन अगम भव सिन्धु में, तुम्हरे चरण जहाज॥
तुम्हरे चरण जहाज, खेय मोहे पार लगाओ।
करहु कृपा की कोर, कृष्ण जी ज्ञान बताओ॥
विनवत दीन विशाल, होय न स्वामी बाधा।
मम उर करहु बिहार, सहित श्री मोहन अरु राधा॥

श्री प्राणनाथ सत्गुरु धनी, श्री देवचन्द्र जी नाम।
राह बताई धाम की, प्रकट कियो निजधाम॥
प्रकट कियो निजधाम, अगम भव तारन हारो।
तुम्हे नवाऊँ माथ, काज अब मेरो सारो॥
भरहु ज्ञान रस बोर, हृदय के बीच हमारे।
करहु बुद्धि मम विमल, विशाल अब शरण तुम्हारे॥

बार-बार विनवहुँ चरण, सद्गुरु दीन दयाल।
तुम्हरे चरण प्रताप ते, भये कौडी से लाल॥
भये कौडी से लाल, गुरू की महिमा भारी।
तारतम्य दे मोय, जगाई आतम प्यारी॥
विनवत दीन विशाल, लई हम गुरु पद्रज सिरदार।
निर्मल कीजो बुद्धि, विनय यह मेरी बारहि बार॥

दोहावली

कृष्ण सच्चिदानन्द प्रभु, पारब्रह्म श्री राज।
सुनियो विनय विशाल अब, हृदय रहो विराज॥१

श्री राज श्यामा सहित, करूँ प्रेम प्रणाम।
सुख सुबुद्धि के हेत नित, बसहु मोर उर धाम॥२

हे यशुदा के लाडले, तुमहि मोर प्रणाम।
सहित लाडली कीर्ति की, बसहु मोर उर धाम॥३

हे राधे करुणामयी, करहु कृपा की कोर।
दर्शन दीजै संगले, प्रीतम नन्द किशोर॥४

श्री प्राणनाथ पूरण परम्, श्री मेहेराज सुनाम।
उघरहिं विकट कपाट उर, सुमिरत जिनके नाम॥५

श्री इन्द्रावती वासना, अरुसुन्दरि सखि जान।
ब्रह्मप्रियन के कारणें, प्रकट भई जग आन॥६

श्री देवचन्द्र के रूप में, श्यामा शक्ति ललाम।
प्रकटी श्री इन्द्रावती, मेहराज जिन नाम॥७

श्री प्राणनाथ सुरचन्द्र अब, कृपा करहु मम ओर।
सुनियो विनय विशाल नित, बन्दहुँ दोऊ कर जोर॥८

ब्रह्मधाम की वासना, साकुण्डल छत्रशाल।
बल बुधि विद्या दीजिए, मेटहु विपति विशाल॥९

गुरुवर पद बन्दन करहुँ, धरहुँ सु चरणान ध्यान।
दया दृष्टि रखियो सदा, दीजै निरमल ज्ञान॥१०

निज गुरुवर पद कंज नित, बन्दहुँ बारम्बार।
खोले हृदय कपाट मम, अब विशाल बलिहार॥११

क्षर अक्षर के पार जो, अक्षरातीत आधार।
श्री प्राणनाथ सद्गुरु धनी, खोल दिये सब द्वार॥१२

निष्कलंक परमात्मा, श्री प्राणनाथ अवतार।
मेट कलंक कजि काल का, कीन्ह ज्ञान उजियार॥१३

अन्य युगों में, ऋषि मुनि ज्ञानी भये महान।
पर पायो नहीं अब तलक, तारतम्य विज्ञान॥१४

धन्य धन्य कलियुग भयो, धन्य सु भारत देश।
धन्य धन्य नवतन पुरी, जहँ प्रकटो ज्ञान विशेष॥१५

श्री देवचन्द्र को दरश दे, श्री रास बिहारी रूप।
निज मुख से निजनाम कह, हृदय बैठ स्वरूप॥१६

तारतम्य प्रकटो जगत, ब्रह्मप्रियन के हेतु।
जग जीवों के हित बना, भव सागर का सेतु॥१७

परा ज्ञान प्रकट भयो, जग में भानु समान।
अन्धकार अज्ञान का, मेटेहु सकल जहान॥१८

शिव विरंच विष्णु सहित, नारद शेष गणेश।
काहू पायो ज्ञाननहिं, पारब्रह्म का देश॥१९

हद बेहद के पार हैं, अक्षर ब्रह्म सुधाम।
अक्षर के पर जानियो, अक्षरातीत परमधाम॥२०

वेद भेद पायो नहीं, गीता ज्ञान विवेक।
अगम अगम सबने कही, ऋषि मुनि भये अनेक॥२१

जोहत आये बाट नित, कब प्रकटे निजधाम।
सोई कलि प्रकट भयो, तारतम्य जग आन॥२२

ब्रह्मतेज है तारतम, उत्तम भानु समान।
भये विलीन साधन सभी, जिमि नक्षत्र केहि ज्ञान॥२३

याही परम प्रभाव को, श्रुति मति वेद पुरान।
शिव सनकादिक ने कहो, कलियुग धन्य बखान॥२४

सतयुग जो फल युग परक, त्रेता पंच बखान।
द्वापर द्वय लख बरष में, कलियुग इक दिन गान॥२५

कृष्ण नाम है एक विधि, भेद तीन विधि जान।
जानहिं गूढ़ रहस्य को, विरले संत सुजान॥२६

पूर्ण पूर्णतर पूर्णतम्, तीनहुँ शक्ति ललाम।
विष्णु लोक गौलाक अरु, परमधाम शुभ ठाम॥२७

गीता में श्री कृष्ण जी, दियो परम उपदेश।
ध्यान करहिं जेहि भाव से, पहुँचे ताहीं देश॥२८

पूर्णभाव बैकुण्ठ पद, पूर्णतर गौलोक धाम।
कृष्ण पूर्णतम् भाव से, पहुँचे निज परमधाम॥२९

पूरव पुण्य प्रताप ते, कृष्ण चरण हुए प्रीत।
वर्णत श्रुति अरु साधु जन, अगम शास्त्र सतरीत॥३०

कृष्ण नाम महिमा परम, रहे संत श्रुति गाय।
सहिजहि नर भव निधि तरहि, धाम अखण्ड सु पाय॥३१

कलियुग केवल कृष्ण केहि, नाम प्रभाव अपार।
भजहि जोय परभाव ते, पहुँचे बेहद पार॥३२

पूर्ण कला रजनीश हुय, उडगन करहिं प्रकाश।
बिन दिनकर होवे नहीं, जैसे रैन विनाश॥३३

बहुतक साधन जगत के, तीरथ तप व्रत दान।
परम कृष्ण के नाम बिन, नहि कलियुग कल्यान॥३४

जन्म अनेक भक्ती करहिं, अन्य देव चितलाय।
राम भक्ति उर ऊपजे, कही पुरानन गाय॥३५

जन्म सहस श्री राम की, भक्ति करहिं धर ध्यान।
तब नारायन भक्ति में, उपजे प्रीत महान॥३६

नारायाण की भक्ति कर, कोट जन्म चितलाय।
कृष्ण भक्ति में प्रीत तब, उपजे उर में आय॥३७

कृष्ण केर पर भाव में, होवे प्रीत महान।
विशाल महिमा नाम की, होय सहिज कल्यान॥३८

परम भानुमत जगत में प्रकट भयो निजनाम।
तारतम्य विज्ञान अस, सहिज मिले परमधाम॥३९

रसना रट निजनाम नित, परम प्रीत सो जोय।
धनी मिलन तब जानियो, जब चातक गति होय॥४०

पीव पीव चातक रटहिं, धन ग्रमी दिन रैन।
दुख पड़े तन पर सहे, बिन प्रीतम नहीं चैन॥४१

विषम वृष्टि वारिधि करहिं, भीगहि शीत सुकाल।
रोष न प्रीतम दोष पर, बाढ़त प्रीत विशाल॥४२

उपल वृष्टि कबहूँ करहिं, पंख होत टूक टूक।
विशाल प्रेमी चातकहि, परत न कबहूँ चूक॥४३

चातक उच्च विचार केहि, पिये न नीचो नीर।
स्वाँति नक्षत्र का पिये, या दुख सहे शरीर॥४४

कृष्ण नाम कलि कल्पतरु, कृष्ण भक्ति सुर धेनु।
सकल सुमंगल मूल जग, गुरु पद पंकज रेनु॥४५

कृष्ण नाम आधार बिन, चहो मुक्ति की आस।
बरसत बारिधि बूँद गहि, चढत चहत आकाश॥४६

कृष्ण नाम मणि दीप जिन, लीन्ह कंठ विच धार।
तिनके भीतर बाहिरो, होत नित्य उजियार॥४७

मिटहिं अमंगल सकल विधि, जपत कृष्ण केहि नाम।
विशाल महिमा नाम की, अंत मिलहिं परमधाम॥४८

कृष्ण नाम गुण सुनत जेहि, हृदय द्रवित न होय।
जिह्वा जपे न नाम जेहि, मनु दादुर सम होय॥४९

कृष्ण नाम लीन्हो नहीं, तेहि मुख अहि बिल जान।
विशाल रसना नाम बिन, सांपिन केहि समान॥५०

कृष्ण कथा कालिन्द्री, गोवर्धन चित चारु।
विशाल उर बृन्दा विपन, श्री राधा कृष्ण बिहारु॥५१

कृष्ण नाम कीरत विमल, अमृत सिन्धु समान।
सकल सुमंगल जगत में, अंत मिले परमधाम॥५२

धन संपति भारी भरी, लोग कहें धनवान।
कृष्ण नाम धन पास नहिं, निर्धन ताको जान॥५३

कृष्ण नाम बड़ रतन धन, जो राखे उर धाम।
विशाल जग कीरत बड़े, अंत मिले परमधाम॥५४

कृष्ण भक्ति से विमुख नर, कुल धन योवन पास।
ताको ऐसे जानियो, जैसे पुष्प पलास॥५५

कृष्ण नाम महिमा परम, गावत संत सुजान।
कोटन अघ नाशहिं तुरत, अन्त होय कल्यान॥५६

सुमन सनेही मधुप जिमि, अरु मणि प्रेमी ब्याल।
कृष्ण भक्ति महिमा निरख, प्रेमी परम विशाल॥५७

मृग प्रमी नित नाद सों, दीपक परम पतंग।
पय प्रेमी नित मीन रह, सुमन सनेही भृंग॥५८

चातक प्रेमी मेघ केहि, विपति रहे सब काल।
श्यामा श्याम स्वरूप के, प्रेमी नित्य विशाल॥५९

प्रेम प्रीत जग संचरे, यह स्वारथ की प्रीत।
प्रेम पंथ गोपी गहो, निश्चल प्रेम अतीत॥६०

प्रीतम अपने कृष्ण पर, रहे सदा बलिहार।
विशाल प्रेयसी गोपिका, प्रेम पंथ जिन सार॥६१

प्रेम न जानत जगत जन, जिन माया में वास।
प्रेम बसत ब्रह्मसृष्टि उर, जिन खेल्यो ब्रजरास॥६२

ब्रह्मसृष्टि प्रकटी सोई, सुन्दर साथ स्वरूप।
विशाल जिन ब्रज रास में, धारे गोपी रूप॥६३

गोपी कृष्ण अनादि हैं, जल तरंग की रीत।
विशाल विलग न होय है, परम पुरातन प्रीत॥६४

सुन्दर-सुन्दरसाथ नहिं, द्वेष भाव उर माहि।
विशाल अपने राज के, प्रेम बचन सुधि नाहि॥६५

प्रेम न सुन्दरसाथ उर, जिनके कपट विचार।
परमधाम तिनको कठिन, भटकहिं जगत मंझार॥६६

पुत्रवती जननी सोई, कृष्ण भक्ति सुत होय।
कुल कुपुत्र बांझिन भली,बृथा सहे दुख सोय॥६७

कुल में एक सुपुत्र से, सुखी रहित परिवार।
जैसे सुन्दर सुमन तरु, देत सुगन्ध अपार॥६८

कुल कुपुत्र ते होत है, नाश सकल परिवार।
जैसे सूखे बाग को, अग्नि करत सब छार॥६९

शूर सपूत सुभक्त सुत, सुयश करे पितु नाम।
विशाल ध्रुव प्रहलाद के, अमर आज भी नाम॥७०

धन सम्पति अरु रूप हो, उत्तम कुल हो वास।
बिना भक्ति इमि जानियो, जैसे पुष्प पलास॥७१

जग जीवन तब सफल हुय, कृष्ण भक्ति सुत होय।
विशाल प्रभु की भक्ति बिन, पशुवत जानो सोय॥७२

मन मधु कर प्रभु पद कमल, लीजै नित्य पराग।
विशाल तब कल्याण हुय, यह विधि जब अनुराग॥७३

प्रभु को प्यारो प्रेम अति, प्रेम न टालो जाये।
प्रेम भक्ति बस कृष्ण हुय, गोपिन लियो नचाय॥७४

प्रेम हृदय की वस्तु है, नाहीं हाट बिकाय।
प्रेम पात्र भई गोपिका, रहे संत श्रुति गाय॥७५

नहीं भेष बैराग्य नहिं, नहीं त्यागा जिन गेह।
धन्य धन्य गोपी भई, केवल सत्य सनेह॥७६

सबहिं नचावत जगत प्रभु, सर्वेश्वर जगदाधार।
सोई गोपिन प्रेम वश, नाचे नन्द कुमार॥७७

दुख विरह उपजावहीं, विरहा सत्य सनेह।
परम प्रेम से मिलत प्रभु, नाहीं कछु संदेह॥७८

दुख से हरि ध्रुव को मिले, पायो धाम अनूप।
दुख से प्रहलादहि मिले, धारो नरसिंह रूप॥७९

दुपद सुता केहि दुःख में, आय बढ़ायो चीर।
दुख से गजराज की, आय हरी हरि पीर॥८०

नरसी मीरा दुख में, हुऐ भक्त रसखान।
विशाल, दीन दुख देखकर, करहिं कृष्ण गुणगान॥८१

दुख से भागो दूर मत, दुख आनन्द केहि मूल।
जागे विरह विराग उर, अन्त मिटे भव मूल॥८२

कृष्ण मंत्र लीन्हो नहीं, जग में नर तन पाय।
जन्म विशाल तेहि वृथा है, पशुवत देह धराय॥८३

कृष्ण मंत्र विहीन नर, ते चाण्ड़ाल समान।
विष्टा सम तेहि अन्न है, मदिरा सम जल जान॥८४

नहिं करील में पात हुय, कहा बसन्त को दोष।
चातक पिये न नीर जो, कहा मेघ सोरोष॥८५

उल्लू दिन दीखे नहीं, भानु दोष कछु नाय।
विशाल जैसी भाग्य में, तैसेहि प्राणी पाय॥८६

पढ-पढ वेद पुराण बहु, पंड़ित बने सुजान।
कृष्ण भक्ति उर में नहीं, जानौ बैल समान॥८७

कृष्ण भक्ति महिमा परम, सहिज होत भव पार।
सद्गुरु कृपा प्रसाद तें, पहुँचे अक्षर पार॥८८

क्षर अक्षर के भेद को, समझो अब चितलाए।
अक्षर ब्रह्म से जो परे, अक्षरातीत कहाये॥८९

मृत्यु लोक से जानियो, सप्त सु नीचे लोक।
सोई वर्णन चितधर सुनहु, मिटहिं हृदय कर शोक॥९०

क्षीर सिन्धु नीचे कहेऊ, नारायण जहाँ वास।
शैया सुन्दर शेष पर, सेवहिं लक्ष्मी खास॥९१

पुनि ताके ऊपर सुनहु, प्रथम लोक पाताल।
नाम वासुकी जहँ नृपति, मणि प्रकाश विशाल॥९२

लोक रसातल तेहि उपर, मणि प्रकाश अपार।
महाताल पुनि जानियो, कहऊँ सु शास्त्र विचार॥९३

लोक रसातल तेहि परे, मणि मय धाम सुहाय।
सुतल लोक ताके ऊपर, जहँ बलि भूप कहाय॥९४

वितल लोक पुनि जानियो, नग मणि केहि प्रकाश।
ता ऊपर सज्जन सुनहु, अतल लोक केहि वास॥९५

अधोलोक यह सप्त मुनि, अष्टम है भू लोक।
मृत्यु लोक याको कहो, मानव वास विवेक॥९६

ताके ऊ सुजन अब, भु वर लोक लेव जान।
स्वर्ग लोक ताके परे, जहँ देवन स्थान॥९७

मिहर लोक याके परे, धर्मराज केहि धाम।
पाप पुण्य निर्णय करहि, अधो, ऊर्द्ध देय ठाम॥९८

ताके पर जन लोक है, सनकादिक जहँ वास।
पनि तप लोक सु जानियो, तपसी करहि निवास॥९९

दिव्य लोक वैकुण्ठ पुनि, परम विष्णु केहि धाम।
राजत लक्ष्मी सहित जहँ, शोभा परम ललाम॥१००

वायें ब्रह्मा की पुरी, ब्रह्माणी संग वास।
दायें शिव अर्धांगिनी, वास करहि कैलाश॥१०१

लोक चर्तुदश भांति इमि, इक ब्रह्माण्ड़ कहाये।
अधिपति याके विष्णु जी, कहें शास्त्र श्रुति गाय॥१०२

लोक चतुर्दश घेर कर, लखहु आवरण आठ।
इक दूजे से दश गुना, बड़ता गया सु ठाठ॥१०३

ज्योति स्वरूप प्रणव ब्रह्म, ओंकार पुनि जान।
ओंकार से हैं परे, गायत्री स्थान॥१०४

महतत्व निराकार पुनि, सात शून्य ठहराय।
कारण श्री महाविष्णु के, राग रंग दर्शाय॥१०५

पुनि महाकारण रूप में, महाविष्णु केहि धाम।
कोटन विष्णु के अधिपति, परम दिव्य शुभ ठाम॥१०६

परमाकाश महाशून्य पुनि, यहाँ तक क्षर विस्तार।
महाप्रलय में यहाँ तक, नष्ट होत सब छार॥१०७

प्रणव ब्रह्म ओंकार पुनि, सदा अखण्ड स्वरूप।
तेजोमय यह धाम अति, परम ज्योति जेहि रूप॥१०८

अव्याकृत स्थूल में, पुनि गायत्री ठाम।
वेदों की माता कही, दिव्य अलौकिक धाम॥१०९

गायत्री पर जानियो, काल निरंजन काल।
सबका संहारण करहिं, महिमा जासु विशाल॥११०

सात शून्य याके परे, अनहद धुनि स्थान।
विविधि रंग जहँ भासही, उठहि विविधि धुनि तान॥१११

सत्य लोक याके परे, जहँ कबीर को धाम।
हद-बेहद के बीच में, रह्यो नित्य यह ठाम॥११२

प्रतिबिम्बित गौलोक पुनि, राधा कृष्ण सुवास।
गोपी ग्वाला धेनु सब, नित्य धाम प्रतिभास॥११३

याके पर बृन्दा विपन, राधा कृष्ण विहार।
नित्य धाम प्रतिबिम्ब यह, श्रुति मति कह्यो विचार॥११४

शक्ति सुमंगला पुनि कही, परम अलौकिक धाम।
महाशक्ति संम्पन्न जेहि, दिव्य पराक्रम काम॥११५

परम पंच शिव शक्ति पर, पलग सुसज्जित जान।
चिदानन्द लहरी यही, बैठी शक्ति महान॥११६

याके पर सज्जन सुनहु, नित्य धाम गौलोक।
विहरति राधा कृष्ण जहँ, तहाँ ताप न शोक॥११७

वन पर्वत यमुना सरित, सुन्दर गोपी बृन्द।
मायातीत सु धाम यह, परम पूर्ण आनन्द॥११८

पुनि ताके पर जानियो, अखण्ड बृन्दावन धाम।
नित्य रासलीला तहाँ, विहरित श्यामा श्याम॥११९

सबलिक ब्रह्म का धाम पुनि, जानो बेहद पार।
दिब्यातीत सु रम्य अति, शोभा परम अपार॥१२०

सबलिक पर सज्जन सुनहु, केवल ब्रह्म सु धाम।
ब्रह्ममयी सत्ता जहाँ, आनन्द मंगल ठाम॥१२१

पुनि याके पर जानियो, अक्षर ब्रह्म सत् रूप।
महिमा परम प्रभाव जेहि, आनन्द धाम अनूप॥१२२

सर्वोपरि पुनि जानियो, दिव्य ब्रह्मपुर ठाम।
आनन्द मंगल सिन्धु सत, नित्य धाम परमधाम॥१२३

श्री राज श्यामा सहित, द्वादश सखि समुदाय।
मूल मिलावा बैठ कर, परम प्रेम दर्शाय॥१२४

रंग महल दश भोम केहि, कोटिन रवि उजियार।
जगमग नग मणि होत जँह, आनन्द छवि भंडार॥१२५

धाम, ताल, यमुना सरित, गिर माणिक पुखराज।
नहर महावन कुञ्जवन, अरु चौगान सु साज॥१२६

नूर, नीर, दधि, क्षीर, घृत, मधु, रस सिन्धु विशाल।
सर्वरस सागर मेहेर का, अष्ट भूमि सुख पाल॥१२७

पक्ष पचीस परमधाम छवि, उर मे लेऊ बसाय।
विशाल विमल विज्ञान यह, गुरु दाया कहो गाय॥१२८

धन्य धन्य कलियुग कहो, धन्य सुभारत देश।
ब्रह्म वासना हेत जहँ, आयो धाम सन्देश॥१२९

तारतम्य प्रकट भयो, महामंत्र निजनाम।
अन्य युगों में न रहो, भव तारक यह नाम॥१३०

बाट सदा हेरत रह्यो, अब तक यह संसार।
विशाल सोई प्रकट भयो, ज्ञान भानु उजियार॥१३१

श्री प्राणनाथ सुरचन्द बर, धाम धनी इत आय।
विशाल ब्रह्म प्रियन हित, कह्यो संदेश लाय॥१३२

ब्रह्मसृष्टि प्रकटी जगत, देखन दुख का खेल।
विशाल वेग अब जागिये,पिया संग कीजै केल॥१३३

परमधाम विहरण करहुँ, श्री राज के संग।
विशाल सद्गुरु की कृपा, निन्द्रा कीजै भंग॥१३४

ज्ञान पाय जो जागहीं, दूसरी देय जगाय।
विशाल यह विधि जागनी, सद्गुरु कही सुनाय॥१३५

सुमन सनेही मधुप जिमि, अस मणि प्रेमी व्याल।
कृष्ण मनोहर रूप के, प्रेमी सदा विशाल॥१३६

सुरन सुधा जेहि भाँति प्रिय, मधुपहि पुष्प पराग।
कृष्ण कथा में मोर तिमि, रहे नित्य अनुराग॥१३७

रसना रट निजनाम नित, पाना प्रीतम जोय।
पिया मिलन तब जानियो, जब चातक गति होय॥१३८

कृष्ण-कृष्ण रटना रटो, धरो उन्ही का ध्यान।
कहु दिन नन्द किशोर के, मनक पड़ेगी ध्यान॥१३९

जगत गरल सम जानियो, अमिय कृष्ण गुण गान।
चढ़ा जहर जो विश्व का, अमृत कीजै पान॥१४०

नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं अमृत की खान।
अलि बीधो क्यों कली सों, अस्त होन को भानु॥१४१

तजी कली नहिं भ्रमर जो, निशा समय को जान।
तो अलि तोको कलि सहित, ग्रसहि काल बलबान॥१४२

रात माहिं कामी जगहिं, अरु जागत हैं चोर।
या जागत कवि भक्त जन, जिन लगी कृष्ण सों ड़ोर॥१४३

मन को मधुकर कीजियो, कृष्ण कमल दल जान।
प्रेम पराग पीजै सदा, जो चाहो कल्यान॥१४४

दिवस गमायो खाय के, रात गमाई सोय।
कृष्ण नाम लीन्हो नहीं, मुक्ति कहाँ से होय॥१४५

सवैया (खण्ड द्वितीय)

मोर मुकुट बनभाल हिये, कानन में कुण्ड़ल छवि छाई।
शोभा तन पे पीताम्बर की, मुरली अधुरन मध्य सुहाई।
रूप त्रिभंगीश्याम किये, अरु वाम अंग राधे दबि पाई।
या छबि ले उर माहि बसहु, श्री लाल के लाल सु आस लगाई॥१

मोहे वक्रसु चंचल नैन, अरु अधर विलोक विम्ब बलिहारी।
भाल विशाल कपोलन की छबि, दंत देख दामिन दुति हारी।
मोर मुकुट कर में, अरु तन सोहे पीताम्बर प्यारी।
सांवरो रूप बसहु नैनन, श्री लाल के लाल सु आस हमारी॥२

भाग्य बड़े ब्रज भूमि के, जहँ पूरण ब्रह्म प्रकट हुय आये।
नन्द यशोदा के भाग्य बड़े, जिन गोद में कृष्ण से लाल खिलाये।
लीला करी ब्रज में बस के, सब गोपी ग्वालन मोद मनाये।
श्री लाल के लाल के भाग्य बड़े, जो राधे कृष्ण उर माहि बसाये॥३

घनश्याम सों मोर भयो मन मोर, प्रीतम सो नित्य आस सु मोरी।
चन्द्रानन पर बलिहार सदा, हेरत है जिमि चन्द्र चकोरी।
चरणाम्बुज में मन मधुप लग्यो, लेत सुवास बहोर बहोरी।
चित्रा नन्दन का तुम्हे बन्दन, यशुदानन्दन ब्रषभानु किशोरी॥४

करुना कर करुनाकर नितही, श्री युगल स्वरूप सदा मम ओरी।
भाल विशाल हिये बनमाल, कर मुरली छबि देत नहोरी।
यह सुन्दर रूप अनूप महा, अति चंचल लाल लाड़िली भोरी।
चित्रा का तम्हे बन्दन, श्री श्यामल श्याम राधिका गोरी॥५

तोय पुत्र तासु सुत के सुत, तासुत मख मुख कीर्ति भली है।
मीन सुता सुत ता सुत नासा, दन्त की छबि मनु कुन्द कली है।
मीनाक्ष मनोहर बाँकी छटा, अरु अधर बिलोकत बिम्बफली है।
श्री लाल के लाल विशाल निहाल, हिये नन्द लाल सु कीर्तिकली है॥६

करुणा निधि कोर कृपा की करहु, हे कृष्ण करहुँ विनती कर जोरी।
जगजाल विशाल निहार सभी, तब लाग्यो चित्त तुम ओरी।
प्रीत पुरातन प्रकट भया अब, जोरी सु परम प्रेम की डोरी।
मम उर नाथ निवास करहु नित, श्यामल श्याम राधिका गोरी॥७

खेलत कृष्ण यशोदा आगन, होत मगन मन में महतारी।
कबहुँ मात की गोद में खेलत,नाचत कबहुँ बजाबत तारी।
कबहुँ प्रतिबिम्ब निहार डरें, अरु म्रागत कबहूँ चन्द्र निहारी।
नन्दलाल के हाल विशाल लखे, तबसे तन की सुधि बुद्धि विसारी॥८

प्रभु दर्शन की हिय आस विशाल, सु नागर नार हृदय यह ठानी।
नन्द के धाम गया ब्रजबाम, कही यशोदा सों सखी मृदुबानी।
उटकत गाय मोरी मैया,इन श्याम के हाथ लगे लेव जानी।
जाव लाल दुह आओ गाय, श्री नन्द महिर मनमें मुस्कानी॥९

संग सखी ले श्याम चली, होत मगन मन में अति भारी।
निरखत जात श्याम छवि को, अरु आसन पर ढिंग जाय बिठारी।
गाय दुह अयने करसों सखि, मोहन मुख मारत पय धारी।
धन्य सखी अरु श्याम तुम्हे, यह प्रीत विशाल टरे नहिं टारी॥१०

एरी सखी मेरे बैन सुनहु तुम, यासे श्याम गात भयो कारो।
भादौं की रैन धरी सुघरी, अरु कृष्ण पक्ष कारो अंधियारो।
काली निशा में प्रकट भयो, श्री नन्द नन्दन यशुदा को दुलारो।
श्री लाल के लाल सुनहु ब्रजलाल, याही सों श्याम गात भयो कारो॥११

दूजी सख अस बैन कहे, अब आली सुनहु यह मतो हमारो।
श्याम घुसे काली दह में, जहँ बास कियो कालिह फनबारो।
श्याम अंग में मेरी सखी, जब विषधर ने मारो फुसकारो।
विशाल सु ब्याल के ज्वाल से हाल, श्री नन्दलाल अंग भयो कारो॥१२

तीजी सखी तब बोल उठी, सजनी सुनहु विचार हमारो।
हम सबही ब्रज वन तन केहि, नन्दलाल बनो अखियन को तारो।
काजल कोर के बीच निवास, भयो विशाल सोय गुण भारो।
कजरारी अखियन में बसे नित, याही सों श्याम अंग भयो कारो॥१३

परम प्रवीण विशाल सखी, तब ज्ञान भरे अस बैन उचारो।
रस श्रृंगार केर रंग श्याम, जासु देव श्री कृष्ण प्यारो।
अति लावण्य राशि उज्जवल छबि, भासत जिमि घन रंग निहारो।
नन्दलाल विशाल रूप छबि सागर, यासों श्याम अंग लखे कारो॥१४

खोजत शेष महेश दिनेश, सुरेश विरंच निरन्तर ध्यावें।
नारद शारद व्यास गणेश, थके नारायण पार न पावें।
खोजत वेद पुराण थके, नहि पावे पार अगम्य बतावे।
सोई कृष्ण यशुदा जननी के, भय से नैनन नीर बहावे॥१५

कोई सिद्ध मुनी सिद्धी के बल, चाहे हिमगिर खेलहि खेल उढावे।
सागर सात पयोनिधि के, भर अंजुल में चाहे पी जावे।
भूमिका भार धरे कर पर, चाहे पृथ्वी के रज कण गिन जावे।
पर कृष्ण नाम की महिमा का, वर्णन करके कोई पार न पावे॥१६

पूरण ब्रह्म श्री कृष्ण के गुण, नहि गाय सके विरंच चतुरानन।
पार न पाई गजानन ने, अरु कह न सके हैं ज्ञानी षड़ानन।
वेद ऋचा नन आनन हारे, गाय थके याको सहसानन।
आनन कोटि विशाल थके, तो मोहि दियो विध एकहि आनन॥१७

नैन वही प्रभु को निरखे, अरु बैन वही प्रभु के गुण गावें।
ध्यान वही जो धनी सो धरे, अरु प्रेम वही जो प्रभुहि रिझावे।
कर्ण वही हरि कथा सुने, अरु चित्त वही चित चोरहि पावे।
श्री लाल के लाल सु पाद वहीं, पूरण ब्रह्म के पंथ को ध्यावे॥१८

बाल भये पलना पौढे, संग मात ने पौढ़ के दूध पिलाये।
पौढत ही पुनि प्रोढ भये, तरुणी संग दिन हंस खेल गवाये।
पौढत-पौढत उमर बीत गयी, पुनि चिता पे पौढन के दिन आये।
धाम अखण्ड के पौढन हारे, ताहि न कबहूँ चित्त में लाये॥१९

तू भूल रहा नर दुनिया में दिन चार के है यह ठाठ ठटा।
छुट जैहै धन परिवार सभी, छुटहै तेरे सब महल अटा।
जा चेत अरे क्यों भूल रहा, सिर ऊपर छाय रही काल घटा।
निजनाम विशाल जपो मन से, जानो तबहीं जम फंद कटा॥२०

वारि बिना सरिता सूनी, अरु सूनी पति बिन नारि कहावे।
सूना सरोवर हंस बिना, सुगन्ध बिना नहिं सुमन सुहावे।
सूनी रैन सु चन्द्र बिना, अरु दीप बिना घर सूनो दिखावे।
प्रेम बिना प्रभु के सु विशाल, त्यों ही सूनी नरदेह कहावे॥२१

सखि याद करहु निजधाम जहाँ, पक्ष पच्चीस परम सुखकारी।
धाम तालाब निकुँज निरख, अरु नहर महावन की छबि प्यारी।
माणिक गिर पुखराज जहाँ,जमुना सरि चौगान सु भारी।
अष्ट सु भूमि विशाल तहाँ, अरु सागर अष्ट सुलेव निहारी॥२२

रंग महल की याद करहु जहाँ, अनुपम खण्ड दशो छबि छाई।
मूल मिलावा की भूमि प्रथम, परम दिव्य शोभा अधिकाई।
कंचन रंग सिंहासन ऊपर, राज रसिक श्यामा छबि पाई।
लख हाल विशाल निहाल भये, जहँ द्वादश सहस सखी समुदाई॥२३

आनन्द धाम की ब्रह्म प्रिया,तुम पूरण परमानन्द विसारी।
धाम विहाय के आये यहाँ सब, भूली फिरहिं गली गलियारी।
विपत्ति पडी विरहाग्नि जरी, अब शीघ्र लेओ सुध राज हमारी।
प्रेम परीक्षा पूर्ण भयी प्रभु, लेव बुलाय सु धाम मझारी॥२४

धाम धनी मम टेर सुनहु, अब कीजे कृपा नाथ मम ओरी।
भूल भई हमसे प्रीतम, जो भाग्यो खेल नाथ बरजोरी।
राज रसिक मम दोष छमहु, हे प्रीतम आस आपसे मोरी।
विपत्ति विशाल प्रियन की हरहु, अब वेग बुलावहु धाम वहोरी॥२५

धाम अखण्ड की ब्रह्म प्रिया, तुम पहिले ब्रज माहि पधारी।
टेर सुनी जब मुरली की, तृणवत् जग छोड़ चली ब्रजनारी।
धिक्कार तुम्हे है ब्रह्म प्रिया, क्यों भूल रही हो अबकी बारी।
निजनाम निजानन्द की बन्शी, अब वेग सुनहु श्री राज पुकारी॥२६

आवन कह परसों की गये, अब बीत गईं बरषों नहीं आये।
गाँव की ग्वालिन छोड़ चले, मथुरा नगरी उनको मन भाये।
प्रीत तजी ब्रज बनितन सो, कुबरी सों नेह नवीन लगाये।
ब्रज बाल विशाल दुखी ब्रज में, नित जोहत बाट श्याम नहीं आये॥२७

बरसत नेह को मेह विशाल सु, झरसत तन जिमि जरत जवारो।
उन कालिन्द्री कूल कदम्बन पे, अब मधुवन कीन्हो आय सुवासो।
ब्रज वनितन को ब्रज में बसिवो, उन श्याम बिना भयो अग्नि अबासो।
पपिया नहीं पानी को प्यासो सखी, कहू ब्यथित वियोगिन प्राणन प्यासो॥२८

ज्ञान को मान बढ्यो उर में, तब श्याम कियो मन माहि विचारी।
ब्रज में ब्रज बनतन को ऊधव, समझैयो ज्ञान को भेद उचारी।
जावे चले तुम शीघ्र सखा, है विकल विशाल ब्रज की नारी।
दीजो उपदेश जाये ब्रज में, श्री राधहिं ब्रषभान दुलारी॥२९

लाये संदेश भलो ऊधव, तब राधे विहंस अस बैन उचारी।
रहे याद सु ज्ञान प्रवीण महान, आये हो प्रेम कुटीर मझारी।
योग की पूँजि संभाल रखो, याको लेवें न छीन ब्रज की नारी।
ब्रजबाल विशाल विरहानल में, जल जाय न ज्ञान की ग्रन्थ तुम्हारी॥३०

मोह तजहु मनमोहन को, अब ज्ञान हमार चितत में दीजे।
योग के आठहुँ अंग सखी, सोई धारण नित्य हृदय में कीजै।
मन को करके एकाग्र सभी, निर्गुण माहि सदा चित दीजे।
ले योग वियोग को दूर करहु, बैन विशाल समझ उर लीजै॥३१

राधे कहें ऊधव मतहीन, यह मोह नहीं है प्रेम हमारो।
रोम-रोम घनश्याम रमें, बिठराऊँ कहां वह ब्रह्म तुम्हारो।
मन मोर लग्यो मनमोहन में, दूजो नहिं मन संग हमारो।
योगिन से भली में वियोगिन ही, चित्रानन्दन मोय श्याम प्यारो॥३२

धनश्याम माहिं मन मोर लग्यो, अब और न दूसरि देव सुहावे।
जेहि मधुकर अम्बुज रस चाखो, क्योकर आक ताहि पुनि भाने।
पान कियो अमृत जिहिने, दूजो रस क्यों ताहि सुहावे।
श्री लाल के लाल छोड चिन्तामणि, को पाहन में चित्त लगावे॥३३

प्रीतम से रहे प्रीत सदा, अरु गोपी गोविन्द के गुण गावे।
छोड़ के रूप सु सुन्दर ऊधव, निराकार में को चित लावे।
कामधेनु विलगाय मूढमति, को अजया को क्षीर दुहावे।
श्री लाल के लाल छोड गजवाहन, को पुनि खर की पीठ चढावे॥३४

आकार हीन वह शून्य ब्रह्म, नहि याको कोई रूप दिखावे।
शून्य को योग न होय कबहूँ, चाहे यतन बहु भाँति करावे।
ऊधव वियोग हमारो सही, जब चाहो योग युगल छबि पावे।
सुन बैन विशाल सु राधा के, ऊधव मन में अस चाह बढ़ावे॥३५

मोय वेग दिखायो योग सखी, कैसो तुममें वह श्याम प्यारो।
श्री राधे श्याम को ध्यान कियो, प्रकट्यो सखि अंग में नन्द दुलारो।
जेहि सखि उत ऊँगली राधे करहि, उतही संग दीखे श्याम प्यारो।
लख विशाल दंग हुये ऊधव, राधहिं धन्य सु धन्य उचारो॥३६

अति पावन प्रेम लख्यो ब्रजमें, तब ज्ञान की भूल गई चतुराई।
गावत गुन गोपाल विशाल, फिरहिं ब्रज गलियन धूम मचाई।
भूल गये मथुरा नगरी, ब्रज में रह बहु दिवस बिताई।
धन्य कह्यो ब्रज गोपिन को, जिन परम प्रेम कर पंथ चलाई॥३७

बसुरी जो बजहि मनमोहन की, सखि मन नहिं मोर रहो बसुरी।
शांझ बजे अरु सबेरे बजे, आधी रात बजे कसके पसुरी।
तन बेसुधि मोर भयो सजनी, मनु नागिन मोय लियो डसुरी।
उर विरह विशाल बढावत है, ऐसी जा बजे बैरिन बसुरी॥३८

योग मायामय मंडल में, लख बृन्दावन सुन्दर सुखदाई।
वृक्षलता वन पुष्प अनेक, कहे कवि को शोभा अधिकाई।
लख चन्द शरद की पूनो को, मन मोहक श्याम ने बन्शी बजाई।
चित्रानन्दन कर जोर कहें, तिहुँ लोखन में बन्शी धुनि छाई॥३९

प्रभु विश्व विमोहिनी बन्शी को, बृन्दावन में जब श्याम बजाई।
मानव की यहाँ कौन कहे, जाने सारी रैन यमुना विलभाई।
अति विकल भई ब्रज की नारी, मुरली धुनि हृदयमें समाई।
दीन विशाल गुणगाय कहें, श्री कृष्ण की ओर चली है सिधाई॥४०

नहिं पैयो मूढ मुढाये प्रभु, नहि पैहो शीश जटा के रखायें।
नहि पैयो तीरथ यज्ञ किये, नहिं पैहों पूनो की गंग नहाये।
नहि पैयो वेद पुराण पढ़े, न पैहो चन्दन तिलक लगायें।
दीन विशाल निजनाम जपे, प्रभु को पैहो अति प्रेम लगाये॥४१

नहीं संग चले धन धाम कछु, छुट जैहे तेरे सब महल अटारी।
छुट जैहै कुटुम्ब परिवार सभी, नहिं संग चले तेरी प्राणन प्यारी।
क्यों भूल रहा इनमें मूरख, तू अन्त समय चले हाथ पसारी।
दीन विशाल कर जोर कहें, जयो निजनाम कही मानो हमारी॥४२

खेलत श्याम विहंस अंगना, मात गोद कबहुँ किलकारी।
मुखदंत की पंक्ति सुकन्द कली, अरु अधर विलोक बिम्ब बलिहारी।
घुँघराली लटे लटके सिर ऊपर, भौहें बक्र नैन छबि प्यारी।
हर्षित हिय होय विशाल महा, नन्द लाल के बाल विनोद निहारी॥४३

आय यशोदा के आंगन, निरखहिं बाल चरित ब्रजनारी।
किलकत गिरत गोद ब्रजवनितम, नाचत कबहूँ बजावत तारी।
प्रीत पुरातन प्रकट होत अति, आनन्द परम अंग संचारी।
ठुमक-ठुमक पग धरत धरन पर, छबि विशाल देखत बलिहारी॥४४

लघु दन्त की पंक्ति सु कन्द कली, अधराधर पल्लव की छबि प्यारी।
माथे युग मणि ज्योति भली, मनु सुरगुरु शुक्र करहिं उजियारी।
कुण्डल लोल कपोलन पर, घुँघराली लटे लटके लटकारी।
दीन 'विशाल' निहाल भये, नन्दलाल के बाल विनोद निहारी॥४५

कवित्त खण्ड

मोर मुकुट धारी कर बाँसुरी सुधारी।
तन पीत वसन प्यारी छबि अनुपम तुम्हारी है ॥
भाल सु विशाल हिये बीच सोहे बनमाल।
गज शावक सी चाल मनु लागत प्यारी है ॥
सुन्दर सुजान साहे मन्द मुस्कान।
अरु मुरली की तान पर मोर मनुहारी है ॥
सुन्दर बदन पर सांवरे से तन पर।
नन्द के नन्दन पर लगन हमारी है ॥१

ध्यावत रमेश विध शारद महेश शेष।
गौरी गणेश गुन बार-बार गायो है ॥
नारद अरु व्यास वेद-वेद ऋचा मानी हार
शुक सनकादि जाको पार नहीं पायो है ॥
सोई साक्षात पूरण ब्रह्म श्री कृष्ण चन्द्र।
भक्तन के हेत ब्रज प्रकट हुय आयो है ॥
बने गोपाल ब्रज गोपिन को प्रेम देख।
गेह-गेह जाय प्रभु गोरस को खायो है ॥२

कीन्ही जल जोर घन घोर महा भारी वृष्टि।
संकट शचीवर आज ब्रज ऊपर डारो है ॥
विनती विशाल करें गोपी अरु ग्वाल बाल।
विपदा से नाथ अब आय के उबारो है ॥
सुनके पुकार उरधार के विचार एह।
धरनी धर कर तब धरनी धर धारो है ॥
मानहु करि कर ते छीन कर कंज लियो।
ऐसो कर करे छबि करुनाकर प्यारो है ॥३

श्याम सात साल के गिरराज सात कोस को।
दिवस सात धारो कियो काम भारी है ॥
नन्द लाल बारो विशाल शैल भारो।
शंका महान गोपी गोप जन विचारी है ॥

बृषभान की कुमारी हंस बैन अस उचारी।
कहा बडो काम कियो कुञ्ज के बिहारी हैं ॥
सुनो सखी मेरी बात हम नाहीं गरुआत।
गिरहु समेत उरधारे गिरधारी है ॥४

शरद का पूर्ण चन्द्र देख श्री कृष्ण चन्द्र।
बृन्दावन जाय श्याम बाँसुरी बजाई है ॥
रस भरी सुनी तान भूल गयो सारो ज्ञान।
घोर तिहुँ लोकन में बन्शी की छाई है ॥
शारद दिनेश देश गौरी गणेश शेष।
नारद महेश निज ध्यानहु भुलाई है ॥
चित्रा के नन्दन आज श्री नन्दनन्दन जू।
ऐसी मनमोहनी सु बाँसुरी बजाई है ॥५

कोई उठ दौरी कोई भूल गई पौरी।
कोई भयी बौरी कौरी कदम्ब के डार की ॥
कोई खोले बार कोई भूषन विसार।
कोई तज के श्रृंगार चली भूली सुधि माल की ॥
कोई दौरी घाटन में कोई धाई कानन में।
कोई फिरे कुञ्जन में दशा थी बिहाल की ॥
सारी ब्रजबाल कठपुतली सी नाच रही।
ऐसी आज बांसुरी बाजी नन्दलाल की ॥६

बाजी उमगाई बाजी द्वार छोड धाई।
बाजी मारग भुलाई बाजी व्याकुल फिरे आगन में॥
बाजी ने विसारा धीर बाजी ने फाडा है चीर।
बाजी के उठी है पीर चैन नहीं मन में ॥
बाजी घर छोड़ भाजी बाजी डर छोड भाजी।
बाजी वर छोड भाजी व्याध लगी तन में ॥
बाजी कहें बाजी बाजी कहें कहां बाजी।
बाजी कहें बांसुरी बाजी बृन्दावन में ॥७

बाँसुरी बजाई योगमाया प्रकटाई।
कीन्ही न बिलम्ब ऐसी करी प्रभुताई है ॥
कालमाया नाश ब्रह्माण्ड को विनाश।
जिमि भानु के प्रकाश से रजनी नशाई है ॥
अनुपम अपार नहीं शोभा को सुमार।
राधा माधव के विहार रास मंडल रचाई है ॥
रचना विशाल जहाँ आय मिली ब्रजबाल।
राजमंडल में हाल सखि दिव्य तन पाई है ॥८

परम छवि धारी आज बांकुरे बिहारी।
रूप को निहारी बलिहारी कोटि काम है ॥
बृन्दावन कानन की शोभा अपार लख।
चिन्तामणि मयी जहाँ सोहत सु धाम है ॥
जोरी बृषभानुजा अरु हलधर के भ्रात की।
हर ब्रजवाम संग एक श्री श्याम है ॥
रासहु रचायो कियोसखिन मन भायो।
श्री लाल के लाल हरी श्याम सखिन हाम है ॥९

जोहत सुनाट अरु बिलोकत बटोई सदा।
अजया का भोजनाहीं अजहूँ पठायो है ॥
शशि रिपु बरष अरु युग बर सूर्य रिपु
हर रिपु भयो अति मोय दुखदाई है ॥
वेद अरु नक्षत्र ग्रह जोर के अर्ध कर।
सोई अब खाऊँ ऐसी मोर मन भाई है ॥
व्यथित विशाल ब्रजनारी बिहारी बिन।
वनिता बिचारी वियोगिन बनाई है ॥१०

तज के ब्रजवाम गये जब से घनश्याम।
लौट आये न ब्रजधाम ऊधव पाती पठाई है ॥
प्रीत की अनीत ते प्रतीत अब ऐसो भयो।
वह श्याम कोई और बसे मथुरा जो जाई है ॥

पीतम हमारो मुरली मोर पृच्छ वारो।
जिन इन्द्रमान मारो सुन्दर रासहु रचाई है ॥
चित्रा के नन्दन श्री नन्दन जू।
मेरो गिरधारी उरधारी भयो आई है ॥११

गुरु जन के सेवक चारु चाकर गुनीजन के।
संतन के दास खास सखा सुज्ञानी के ॥
खलन निरमोही जन जलन कर द्रोही।
दीनन सो दीन अरु दलन अभिमानी के ॥
कविजन के मीत प्रीत रीत सदा प्रेमिन के।
परम सनेही सुन्दरसाथ सुखदानी के ॥
भावत विशाल भाव भक्ति श्री राज के।
चारु चरण चित्त श्री श्यामा महरानी के ॥१

ज्ञानी गणेश अरु ध्यानी महेश जैसे।
छाई जिमि कीर्ति धनुधारी राम राज की ॥
सत्य व्रतधारी हरिशचन्द्र कर्ण दानवीर।
परम प्रताप कलाधारी द्वजराज की ॥
असुर संहारन अरु भक्त दुख टारन।
गोपी प्रेम कारन लीलाधारी ब्रजराज की ॥
भानु के प्रताप सम छाय रही कीर्ति देश।
सेवाव्रत धारी 'परमानन्द' महाराज की ॥१३

जाना जनक जननी को भ्रात अरु भगनी को।
नारि सुत सखा परिवार सब जाना है ॥
शत्रु जाना मित्र जाना गेह अरु सनेह जाना।
धन का कमाना अनेक विधि जाना है ॥
जग में रह कर के सब कुछ तो जाना।
पर आज तक तूने अपने आप को न जाना है ॥
विनवत विशाल शीघ्र सतगुरु की शरण जाय।
लीजे निजनाम निजधाम तोय जाना है ॥१४

गंगा अनेक बार व्रत करो बार-बार।
काशी व पुष्कर अनेक बार जाइये ॥
अश्वमेध यज्ञ अरु हवन अनेक विधि।
देह दमन कर ध्यानहु लगाईये ॥
मूड़हू मुडाय चाहे जटा सरि रखाय के।
भसम लगाय तन योगहू रमाईये ॥
विनवत विशाल निजनाम तारतम्य बिना।
अक्षरातीत पारब्रह्म को न पाईये ॥१५

तीरथ अनेक बार गंगहु नहाय नित।
मुक्त हेत चाहे बहु यज्ञहु कराय ते ॥
व्रत उपवास चाहे करिये अनेक विधि।
पुण्य हेत चाहे बहु दानहु कराये ते ॥
तप अरु त्याग पाठ वेद अरु पुराण कर
मौन व्रत धार जोग जुगत लगाय ते ॥
जेते फल होत यह साधन अनेक किये।
होवत विशाल फल कृष्ण नाम गाये ते ॥१६

ध्यावत सु चन्द्र मौल आसन सरोज जाय।
गावत गणेश गुण शेष पचिहारे हैं॥
सिन्धु सुता चक्रपाणि बन्दत सु बार-बार
नारद अरु शारद जेहि ध्यान में संभारे हैं ॥
व्यास शुकदेव गर्ग मर्म न पायो जासु।
आगम निगम जाय खोज-खोज हारे हैं ॥
सोई विशाल पार ब्रह्म बाल रूप धार।
ब्रज में आय बने यशुदा दुलारे हैं ॥१७

आरती खण्ड

आरती श्री राज जी की

श्री राज चरण भज रे स्वामी राज चरण भज रे॥
पूरण ब्रह्म श्रीकृष्ण का नित उठ ध्यान धरे॥टेक॥
कंचन रंग सिंहासन, सोहत सुखधामा॥स्वामी सो0॥
राज रसिक छवि भारी, वाम अंग श्यामा॥१॥
अक्षर ब्रह्म अविनाशी, दर्शन को आवे॥स्वामी द0॥
रूप किशोर निहारी, आनन्द अति पावें॥२॥
पक्ष पच्चीस निहारा, सुन्दर सुखकारी॥स्वामी सु0॥
ताल निकुंञ्ज सुधामा, महावन छवि प्यारी॥३॥
गिर पुखराज निहारो, यमुना की धारा॥स्वामी0॥
है चौगान सु भारी, झिलमिल झलकारा॥४॥
अष्ट सिन्धु भू अष्ट की, महिमा है भारी॥स्वामी0॥
परम प्रकाश सुहावे, कोटिन रवि भारी॥५॥
जो जन ध्यान लगावे, विलसय निजधामा॥स्वामी0॥
आवागमन नशावे पावे वर श्यामा॥६॥

आरती श्री प्राणनाथ जी की

आरती प्राणन प्यारे की श्री केशव नन्द दुलारो की
रूप है दिव्य कान्ति वाला, गले मे मुक्तन की माला।
श्रवन में कुण्डल झलकारा॥
हर्षित सुन्दरसाथ, नवावे माथ, धन्य तुम्हें नाथ,
शरण नित जग उजियारे की॥ श्री केशव नन्द0॥१॥

स्वामिनी तेज कुँवर नामा, विराजी वाम अंग श्यामा।
साथ सब करते परनामा॥

सुसुन्दर अलक, भालपर तिलक, सूर्य सम झलक।
ललित छबि पंजे वारे की॥श्री केशव नन्द॥२॥

दरश को नर नारी आवे, आरती हर्षित हो गावें।
निरख छबि सब बलि-बलि जावें॥

आप पर ध्यान, करें गुणगान, मधुर मुस्कान।
धनी पूरण ब्रह्म प्यारे की॥श्री केशव नन्द॥३॥

परम छबि उर से न निकसे, देवता दर्शन को तरसे।
गगन से सुमन बहुत बरसे॥

बाजे सुन्दर चंग, और मृदंग, साथ सब संग।
मधुर ध्वनि जै-जै कारे की ॥श्री केशव नन्द॥४॥

विराजे पन्ना जी धमा, श्री जी महामति सुखधामा।
करें पूरण मन के कामा॥

सेवा में छत्रशाल, रहे ततकाल, यह विनय विशाल।
टेर सुन दीन विचारे की॥श्री केशव नन्द ॥५॥

आरती श्री राज जी की

आरती श्यामा प्यारी की, कृष्ण निजधाम बिहारी की॥

सिंदुरिया श्यामा तन सारी, चरनिया लाही उनहारी।
कंचुकी श्याम रंग प्यारी॥

बेदी भाल बहार, गले में हार, रतन झलकार।
ललित छबि अति सुकुमारी की॥ कृष्ण निजधाम॥१॥

राज छवि अनुपम गम्भीरा, सोह सिर सींदुरिया चीरा।
मुकुट में जगमग नग हीरा॥

कुण्डल श्रवन विशाल, तिलक है भाल, गले में माल।
परम दुति पट उजियारी की॥ कृष्ण निजधाम॥२॥

मिलावा मूल मांहि राजे, कनक रंग सिंहासन छाजे।
युगल छबि निरखत हर्षावे॥
सेवा में सखी सुजान, धनी पर ध्यान, करें गुणगान।
परम प्रीतम हितकारी की॥ कृष्ण निजधाम॥३॥
युगुल छबि उरसे न निकसे, परम छबि निशि वासर दरशे।
प्रेम रस हृदय में बरसे॥
विशाल आरति गाय, रहे हर्षाय, प्रेम उर लाय।
रसिक श्यामा वर प्यारी की॥कृष्ण निजधाम॥४॥

आरती पूर्णब्रह्म श्री राजश्यामा जी की

आरती पूर्ण ब्रह्म की कीजै, श्यामा राज चरण चित दीजै॥
कंचन रंग सिंहासन सोहे, युगुल रूप देखत मन मोहै।
रवि शशि कोटि बदन की शोभा, परम स्वरूप देखत मन लोभा।
अनुपम छबि हृदय बिच लीजै॥ आरती पूर्ण ब्रह्म॥१॥
सींदुरिया रंग श्यामा सारी, श्याम रंग कंचुकी प्यारी।
लाही रंग चरनिया सोहे, मणिमय मुकुट शीश पर सोहे।
रूप अनूप निरख सुख लीजै॥ आरती पूर्ण ब्रह्म॥२॥
श्रीराज सिर सुन्दर चीरा, मुकुट मध्य जगमग नग हीरा।
केसरिया श्री राज इजारा, जामा रंग श्वेत निहारा।
विविध हार गल बिच लख लीजै॥आरती पूर्ण ब्रह्म॥३॥
श्री राज श्यामा छबि भारी, निरख-निरख जाऊँ बलिहारी।
सकल सखी मिल आरती गावें, युगुल रूप पर बलि बलि जावे।
दीन 'विशाल' हरष उर कीजै॥आरती पूर्ण ब्रह्म॥४॥

ढीट यशोदा तेरा लाल हो गया।
यमुना के तीर माता मोको मिल गया ॥टेक॥

ढीट यशोदा तेरा लाल हो गया।
यमुना के तीर माता मोको मिल गया ॥टेक॥

मारग में मिले मोको मोहन मुरारी।
बहिया मरोर मेरी चोली है फारी।
मटुकी हमारी मोहन फोर तो गया ॥यमुना के तीर... ॥

बहुतक कही उन एक न मानी।
ईंडुरी छुडाय फेंकी यमुना के पानी
ऐसो अन्याई नन्द लाल हो गया ॥यमुना के तीर... ॥

कहते हैं कृष्ण के सुनो माता हमारी।
झाड़ी में उरझी फटी चोली अरु सारी।
रपटी है सखी घड़ा फूट तो गया ॥यमुना के तीर॥

कृष्ण के वचन सुन सखी मुस्काई।
कहते विशाल चली घर को सिधाई।
उन्हीं घनश्याम से प्यार हो गया ॥यमुना के तीर॥

सवैया

सिर पर धर गोरस की मटुकी, दधि बेचन हेत चली ब्रजनारी।
धेन चरावत ग्वालन के संग, मग बीच मिले श्री कुजंबिहारी॥
घेर के गैल खडे मन मोहन, मागत दधि को दान मुरारी।
दीन विशाल गुणगाय कहें, लई कृष्ण ने रोक सभी ब्रजनारी॥

दान लेन के हेत प्रभु, घेर लईं ब्रजवाम।
सखिन शिरोमणि राधिका, कहे सुनहु हे श्याम॥

पद नं- 2

छोडो मोहन मेरी गैल कहे ब्रषभानु दुलारी रे ॥टेक॥
चराते वन-वन में गाई, दिखावत मोंकों ठकुराई।
दान न पावो कन्हाई॥
तुमको लाज न आवे मोहन घेरो नारी रे॥१॥
धूप तुमहु सहती प्यारी, फिरहु वन वन मारी मारी।
शीश पर मटुकी लई धारी॥
देवो दान सखी तब छोडू गैल तिहारी रे॥२॥
रहे क्यों निज कीरत गाई, दही बेचे यशुदा माई॥
बडे दस गौअन से भाई॥
एकहि जाति अहीर की हम तुम सुनहु मुरारी रे॥३॥
समझ के बोलो तुम प्यारी, गोव सब गोकुल के भारी॥
सबन से बडे नन्द प्यारी॥
दीन विशाल लिख रहे, कृष्ण की लीला प्यारी रे॥४॥

-: कीर्तन खण्ड :- पद नं- 3

दोहा- वन में घेरी गैल है नटवर नन्द कुमार।
देन उरहना सखी तब पहुँची नन्द के द्वार॥

माता ढीट भयो तेरो लाल, गैल मेरी मोहन घेरी रे॥टेक॥
शीश घर गोरस की मटुकी, गई मारग बन्शीवट की।
श्याम ने बाँह पकर झटकी॥
लेकर ग्वाल संग मोहन ने, मारग घेरी रे॥१॥
मसक दई चोली गिरधारी, फाड दई रेशम की सारी॥
शीश की मटुकी भुय डारी॥
गले के टोरो हार श्याम ने करी न देरी रे॥२॥

उरझ गई झाड़ी में सारी, रपट गई वन में ब्रजनारी॥
शीश से गिर गई तब झारी॥
झूठ उरहनादेन मात यह आई सखीरी रे॥३॥
सुनी मनमोहन की बानी, सखी सब मन में हर्षानी॥
चली घर अति ही सुखमानी
कहें लाल के लाल कृष्णसे प्रीत घनेरी रे॥४॥

पद नं- 4

जपो कृष्ण को चाहो जो भाई।
इसी हेत दुनिया में नर देह पाई रे॥टेक॥

दोहा- पाँच जन्म जो नर करहिं, अन्य भक्ति चितधार।
हयग्रीव की भक्ति को, पावे तब नर नार॥
हयग्रीव की भक्ति जो, करहिं दश जन्म बनाय।
तब नृसिंह भगवान में, प्रीत होत अधिकाय॥
पुराण हरितन्त्र में यह है गाई॥जपो कृष्ण को॥१॥

दोहा- करहिं भक्ति शत जन्म जो, नरसिंह की हितलाय।
सीता पति श्री राम की, भक्ति तबहि नर पाय॥
जन्म सहस श्री राम की, भक्ति करहिं मन लाय।
तब नारायण भक्ति को, कठिन माहि नर पाय॥
मिलती नहीं मुक्ति फिर भी है भाई॥जपो कृष्ण को॥२॥

दोहा- नारायण की भक्ति करहिं कोट जन्म धर ध्यान।
तब श्री कृष्ण के चरण में, उपजे प्रीत महान॥
सात जन्म श्री कृष्ण की, भक्ति करहिं धर ध्यान।
प्रभु कृपा से तब मिलहि, तारतम्य का ज्ञान॥
ऐसी कठिन कृष्ण भक्ति है भाई॥ जपो कृष्ण को॥३॥

दोहा- प्रेम लगाकर जपहिं, तारतम्य नर नार।
दुख रूपी भव सिन्धु में, सोई पावे नर नार॥
कृष्ण कृष्ण जपते रहो, मानुष का तन पाय।
दीन विशाल की विनय को, सुनहु सुजन चितलाय॥
पैहो तभी मुक्ति को मेरे भाई॥ जपो कृष्ण को॥४॥

पद नं- 5

अरे मति भूले ज्ञानी दुनिया के मेले में॥टेक॥
झूठ सब जग में हैं व्यवहार, झूठ सब सम्पति अरु परिवार।
करे क्यों इनमें तू अति प्यार॥
उमर तेरी बीते सारी जाही झमेले में॥अरे मति॥१॥
संग न तेरे कोई जाय, तेरी प्राणन प्यारी छुट जाय।
साथ तेरे काया भी न जाय॥
अरे तोय जाना होवे जग से अकेले में॥ अरे मति॥२॥
कठिन दुख रूपी है संसार, पड़ी तेरी नैया है मझधार।
सोच ले तू मूरख बदकार॥
जन्म मति खोवे वृथा, दुनिया के मेले में॥ अरे मति॥३॥
जपो तुम कृष्ण नाम जो सार, तभी तेरी नैया होवे पार।
कहत है दीन विशाल विचार॥
प्रीत मेरी लागी प्यारे नन्द नन्दोले में॥ अरे मति॥४॥

पद नं- 6

दया के नाथ हमको भी शरण अपनी में ले लेना॥टेक॥
खड़े हम द्वार पर आकर, दया का दान दे देना॥

सुना है आप भक्तों पर, सदा करते दया आये।
आज बारी हमारी है, नहीं हमको भुला देना॥१पतित
पावन हो तुम स्वामी, अनेको तारे है पापी॥
पतित सिरताज हमको भी, भक्ति का दान दे देना॥२
अगम भवसिन्धु है भारी, काम अरु मोह है जिसमें।
जान के हमको है स्वामी, सदा हमको बचा लेना॥३
सुनो अब टेर विशाल की, धनी हे धाम के प्यारे।
बहाता अश्रु हे स्वामी, कष्ट मेरे मिटा देना॥दया॥४

पद नं- 7

चलो रे सहेली अपने निजधाम को जी।
ऐजी जहँ कोटिन रवि उजियार॥चलो॥टेक॥
इतै तो अक्षर उत निजधाम है जी।
एजी जहँ विच में यमुना धार॥चलो॥१
रंग महल सोहे दश खण्ड को जी।
ऐजी जामें पूरब दीरघ द्वार॥चलो॥२
मूल मिलावा सोहे पहली भोम में जी।
ऐजी जहँ चौसठ खंभ निहार॥चलो॥३
हेम सिंहासन बैठे श्यामा राज हैं जी।
ऐजी जहाँ जगमग मणि उजियार॥चलो॥४
छोड के सुन्दर ऐसो अपने धाम को जी।
ऐजी सब भूली जगत मंझार॥चलो॥५
सुनके संदेशा चलियो अपने धाम को जी।
ऐजी अब सद्गुरु करी पुकार॥चलो॥६

पद नं- 8

देखो ब्रह्मांगनाओ जरा जाग कर, इस जगत में भुलाना गजब हो गया।
भेजा संदेश प्रभु ने तुम्हारे लिए, ध्यान उस पर न लाना गजब हो गया॥
सब ने मिल करके मांगा श्री राज से, दुःख रूपी जगत देखने के लिए।
बरजी प्रीतम ने हरबार सब साथ को, कहा उनका न माना गजब हो गया॥
आके भूली सभी ब्रह्मसृष्टि यहाँ, दुख उठाये बहुत सबसे इस विश्व में।
तब जगाने को निजानन्द जी, अरु श्री जी का आना गजब हो गया॥
किया है उदय सूर्य निजनाम का, अरु मिटाया तिमिर घोर अज्ञान का।
अब गई है निशा प्रात का है समय, साथ सब जान जाना गजब हो गया॥
तोड़दो शीघ्र मायाके भ्रमजालको, आप अपने को अब बेग पहिचान लो।
सिंह होके बृथा क्यों बने स्यार हो, जोश तुम में न आना गजब हो गया॥

पद नंबर - 9

जाग जाओ जरा धामके वासियों, इस जगत में तो अपना गुजारा नहीं।
भूले संसार में साथ सुंदर मेरे, धाम की और तुमने निहारा नहीं॥
करके वादा चले खास निजधाम से, वेग आवेगी हम खेल को देख कर।
यहां आकर के भूली हो भ्रम जाल में प्राण पति को है तुमने निहारा नहीं॥
सुनकर वाणी न दौड़ी जो निजधामको,
श्रीजी कि उन्हीं सब का धिक्कार है।
नीचा सिर हो वहां प्रभु के दरबार में, उसको तुमने तो सोचा विचारा नहीं॥
हो रही हैं परीक्षा यहां प्रेम की, कहा था कि जैसा श्री राज ने।
उस परीक्षा में हम सब सफल न हुए, प्रेम प्रभु के बराबर हमारा नहीं॥
चेत जाओ जरा होश में आओ,
अब यह सुहाना अरु सुंदर समय आ गया।
जोर के हाथ विशाल विनय कर रहा अब भुलाना निजधाम प्यारा नहीं॥

पद नंबर - 10

तेरे चरणों में श्री राज लिपट जाऊं रज बनके।
मेरे ऊपर श्यामा श्याम बरस जाओ रज बनके ॥टेक॥

तुम चरणन में आस हमारी, हे मम प्रीतम धाम बिहारी।
नित जपत तुम्हारो नाम॥ बरस जाओ रज बनके॥ १

और नहीं जग में कोई मेरा, केवल नाथ सहारा तेरा।
मेरे बस जाओ उर धाम॥ बरस जाओ रज बनके॥ २

ब्रह्म सृष्टि पर विपदा भारी, विरह व्यथा में व्याकुल सारी।
विशाल उर निजनाम॥ बरस जाओ रज बनके॥ ३

पद नंबर - 11

मोहे लागी लगन राज चरणन की।
राज चरणन की श्यामा चरणन की ॥टेक॥

तज निजनाम जगत में आई ब्रह्मसृष्टि निज वतन भुलाई।
प्रभु कीन्हीं कृपा अब निज जनकी॥मोहे लागी लगन॥१

सद्गुरु प्राणनाथ जग आये धाम, रास, ब्रज, बोध बताये।
सुधि पाई सबन तब निज तन की॥मोहे लागी लगन॥२

जागृत बुद्धि भई अब मेरी दीन विशाल विकल हुए टेरी।
हरहु व्यथा अब निजजन की॥ मोहे लागी लगन॥ ३

पद नंबर - 12

बुला लो अब निजधाम बिहारी ॥टेक॥

है दुख मयी जगत यह सपना यहां पर कोई नहीं है अपना।
विपदा है भारी॥बुला लो अब निजधाम॥१

धाम धनी श्री राज प्यारे मेटहु सब दुख आप हमारे।
केवल आज तुम्हारी॥बुला लो अब निजधाम॥२

विनय विशाल करें कर जोरी पूरण करो कामना मोरी।
अंतिम आस तुम्हारी॥बुला लो अब निजधाम॥३

पद नंबर - 13

मेरे प्रीतम राज पिया दुख यह कैसा दिया॥टेक॥

धाम विहाय जगत में आई, निज घर की सब सूरत भुलाई।
सदगुरु ज्ञान दिया॥ मेरे प्रीतम राज पिया दुख॥ १

ब्रह्म प्रिया व्याकुल है भारी,कृपा करो अब धाम बिहारी।
बिरहा व्यथित जिया॥ मेरे प्रीतम राज पिया दुख॥ २

दीन विशाल यह विनय उचारे, हरहु सबन के संकट सारे।
तुम पर ध्यान दिया॥ मेरे प्रीतम राज पिया दुख॥ ३

पद नंबर - 14

भक्ति रंग में रंगा हर जमाना मिले, मैं वहां ही रहूं घर सुहाना मिले॥टेक

मेरे निज़ घर की शोभा तो भरपूर है, जहां देखो वहां नूर ही नूर है।
बदकिस्मत है वो जो रहे दूर है, तेरी रहमत का अब प्रभु खजाना मिले॥१

छवि युगल रूप की उर में बसती रहे, राज दशकों पे छाई ए मस्ती रहे।
दीन भक्तों के उर में यह भक्ति रहे, राज चरणों की रज में ठिकाना मिले॥२

मूल उत्तम मेरा यह परमधाम है, सच्चिदानंद पावन यह सुखधाम है।
वही पावे जपें मन से निजनाम है, ज्ञान सदगुरु का सच्चा खजाना मिले॥३

पद नंबर - 15

नैयनों में समा जा सांवरिया, मैं तो भई हूं बावरिया॥टेक॥

चैन आवे नहीं श्याम तेरे बिना, नींद आवे न मोको रैन दिना।
सुनी जब से तेरी है बांसुरिया॥नैयनों में समा जा॥१

सूरत तेरी समाई है उर मैं मेरे, और दिल में न कोई मोहन तेरे।
भक्ति रंग यह रहे सारी उमरिया॥ नैयनों में समा जा॥ २

श्यामके प्रेममें सब दीवानी भई, श्याम संगमें नचूँ यह मस्ती नई।
तेरी बंसी बजे मेरी पायलिया॥ नैयनों में समा जा॥ ३

पद नंबर - 16

जब से गये छोड़ ब्रज श्याम चैन दिन रैन ना आवे रे॥टेक॥

मथुरा जाए बसे बनवारी बिलखत तजी सभी ब्रजनारी।
तुम बिन व्याकुल आठौ याम॥जब से गये छोड़ ब्रज॥१

बिरह ब्यथा में व्याकुल सखियां रोए रोए भीगी रहे अखियां।
घर को भावे ना कछु काम॥ जब से गये छोड़ ब्रज॥ २

दुखी महा वृषभानु कुमारी तन की सब सुधि बुद्धि विसारी।
मुख से रटत कृष्ण को नाम॥जब से गये छोड़ ब्रज॥ ३

व्याकुल धेनु गोप अरु ग्वाला आकर कब मिलेहो नंदलाला।
सूनो दीख रहो ब्रज धाम॥ जब से गये छोड़ ब्रज॥ ४

दीन विशाल बिना बनवारी ब्रज के लोग दुखी अति भारी।
हेरत बाट सुबह अरु शाम॥ जब से गये छोड़ ब्रज॥ ५

पद नंबर - 17

मेरो छुटो हरि सो संग वेग, ब्रज आय जइयो सांवरिया॥टेक॥

गोपनि सों तुम प्रीत बसिारी, मथुरा कुब्जा भई घरवारी।
यह नहीं प्रेम को ढंग॥मेरो छुटो हरि सो संग वेग॥१

वलिख रही ब्रज राधा प्यारी, नीर सदा नैनन सों जारी।
जब से छुटो श्याम को संग॥मेरो छुटो हरि सो संग वेग॥२

गोपी, ग्वाल, धेनु दुखियारी, दुर्बल तन भये दुखी विचारी।
विरह में व्याकुल रहते तंग॥मेरो छुटो हरि सो संग वेग॥३

दीन विशाल वेग दुख टारो, दर्शन दे ब्रज श्याम उबारो।
मत करहु प्रेम को भंग॥मेरो छुटो हरि सो संग वेग॥४

पद नंबर - 18

आतम बिलख रही, कर कर याद राज श्यामा की॥टेक॥

तज निजधाम जगत में आई, ब्रह्म प्रिया रही कष्ट उठाई।
नहीं धाम की याद रही॥मेरो छुटो हरि सो संग वेग॥१

सद्गुरु प्राणनाथ इत आये, धाम, रास, ब्रज बोध बताये।
वतन की बात कही॥ मेरो छुटो हरि सो संग वेग॥ २

अब तो सुरति धाम की आई, तन में विरह व्यथा अधिकाई।
निशि दिन रोय रही॥ मेरो छुटो हरि सो संग वेग॥ ३

धाम धनी यह विनय हमारी, हरहु सबन की विपदा सारी।
दीन विशाल कही॥ मेरो छुटो हरि सो संग वेग॥ ४

पद नंबर - 19

कृष्ण नाम जग तारो लगत मोय अति प्यारो॥ टेक॥

कृष्ण नाम नरसी जप लीन्हा, प्रभु पर सकल समर्पित कीन्हा।
भात भरो प्रभु सारो॥ कृष्ण नाम जग तारो॥ १

मीरा जी की भई कृष्ण दिवानी, योगिनी बनी रही नहीं रानी।
सब संकट टारो॥ कृष्ण नाम जग तारो॥ २

प्राणनाथ सतगुरु इत आये, कृष्ण नाम कर सार बताये।
विशाल उर धारो॥ कृष्ण नाम जग तारो॥ ३

पद नंबर - 20

मेरी टेर सुनहु यशुदा के ललन, दुख दूर हटाने वाले ॥टेक
ब्रज जन के सब संकट टारे, अघा, बकासुर वन में मारे।
दुष्टन को प्रभु कीन्हों दमन ॥मेरी टेर सुनहु यशुदा ॥१
सुरपति कोप कियो जब भारी, तब कर पर गोवर्धन धारी।
ब्रज जन सारे मन में मगन ॥मेरी टेर सुनहु यशुदा ॥२
भक्तन के तुम संकट टारे, दीन विशाल है आप सहारे।
कृष्ण चरण नित मेरी लगन ॥मेरी टेर सुनहु यशुदा ॥३

पद नंबर - 21

अदभूत अनुपम बाग निहारी ॥टेक॥
युगुल कमल पर कुंजर क्रीड़त, तापर सिंह शिकारी।
केहरि पर सखर इक सुंदर, शोभा अधिक अपारी ॥१
शैल शिखर युग ताके ऊपर, फूले कंज सुचारी।
परम कपोत बास तेहि ऊपर, अमृत फल एक डारी ॥२
फल पर पुहुप पुहुप पर पल्लव, शुक्र, पिक, काग बिहारी।
खंजन, धनुष, चंद्र, तेहि ऊपर, मणिधर इक विषधारी ॥३
अंग अंग प्रति देख देख छवि, उपमा कह मति हारी।
श्याम सदा यह पियत रूप रस, लख विशाल बलिहारी ॥४

पद नंबर - 22

ऐसो अनुपम रूप सुहाई ॥टेक॥
पड्यो नीलिगिर आतप प्रातहि, अम्बर सुभग दिखाई।
केक पृच्छ सिर ऊपर राजत, चन्द देख सरमाई ॥१

युग मणि माथे मध्य विराजत, सुर, गुरु, शुक्र लजाई।
भौहें धनुष नैन खग खंजन, अंजन पिक दशाई॥२
गाल कपोत दंत दाडिम मुख, करिवर भोज सुहाई।
अधर देख बिम्बा फल लाजत, नासा सुक सरमाई॥३
जिमि घनश्याम शुभ्र बक पांती, मोतिन माल सुहाई।
भुज विशाल कटि केहरि सोहत, उपमा कह सकुचाई॥४
चरणन महामनोहर शोभा, नीलाम्बुज सुखदाई।
पियत पराग विशाल बास हित, मन मधुकर अटकाई॥५

पद नंबर - 23

हम ना योग रमइयों रे ऊधव॥टेक॥
यह पटिया मेरे हरि ने गुहीं है, कैसे इन्हें बिगरहौं रे ऊधव॥१
जा तन मलो अरगजा हरि ने, ना हीं भसम लगैहौं रे ऊधव॥२
निर्गुण कौन कहां को वासी, कैसे ध्यान लगैहो रे ऊधव॥३
रोम रोम मेरे श्याम रमे हैं, उन्हीं से ध्यान लगैहौं रे ऊधव॥४
हम हैं दासी प्रेम की प्यासी, श्याम कृष्ण गुण गैहों रे ऊधव॥५
दीन विशाल आस मोहन की, उन्हीं के गुण गैहों रे ऊधव॥६

पद नंबर - 24

जब से लखो पयिा को देश सूरता मेरी झोखा खाय रही है॥
हद, बेहद, क्षर अक्षर पारा, अक्षरातीत सु धाम हमारा।
लाये प्राणनाथ संदेश॥जब से लखो पयिा को देश॥१
सात घाट जमुना जी सोहे, केल और बट पुल दुय जोहे।
मध्य में अमृत घाट वशिष॥जब से लखो पयिा को॥२

चांदनी चौक चबूतरा चारा, पूरब दिशि जहं दीरघ द्वारा।
जहं पर नंग मणियन उद्योत ॥जब से लखो पिया को ॥३
चारहु हार हवेलिन पारा, मूल मिलावा नयन निहारा।
जहां पर नहीं माया को लेस ॥जब से लखो पिया को ॥४
कंचन रंग सिंहासन भारी, युगल रूप बैठे पिव प्यारी।
द्वादश सहस सखिन के भेष ॥जब से लखो पिया को ॥५
होवत परम प्रकाश अपारा, दीन विशाल लखो दरवारा।
लाजित कोटिन दिव्य दिनेश ॥जब से लखो पिया को ॥६

पद नंबर - 25

मोय दियो पिया परदेस हमारे करम लिखी सो होवे ॥टेक॥
आप विराजे स्वामी परमधाम में, हमको कठिन कलेश ॥१
प्राणनाथ सदगुरु इत आए, जिन दियो धाम संदेश ॥२
तारतम्य जाग्रति बुधि लाये, आतम ज्ञान विशेष ॥३
जगी सखी सोई पिया की प्यारी, चलो आपने देश ॥४
दीन विशाल कहत कर जोरे, मेरो जन-जन को संदेश ॥५

पद नंबर - 26 सांगीत

गुरु महिमा जग सार ऐसी। ॥टेक॥
सदुरु के प्रताप प्राणी होवत भव से पार॥
गुरु के प्रभाव प्रह्लाद ने कियो है नाम।
गर्व बीच पायो ज्ञान रटो जाने कृष्ण नाम॥
कष्ट से बचायो टेर सुनी शीघ्र घनश्याम। जी॥

गुरु के प्रताप बाल्मीक मुनि सानी भये।
व्रत को उलट लौ राम सो लगाए गए॥
रच रामायण जग परमयश पाय गये। जी॥
शंकर को पाय गुरु शुक ने जो ज्ञान लियो
अमर कथा सुन अमर पद पाय लियो॥
ज्ञानियो में श्रेष्ठ शुकदेव जी को नाम भयो।
कह्यो भागवत सार॥ऐसी॥२

यज्ञबाल्क भरद्वाज पारासर लेव जान।
सृंगी और लोमश ने गुरु से लिया है ज्ञान॥
नारद चिमन यमदग्नि जी लेव मान। जी॥
बल्लभाचार्य चेतन्य निम्बार्क हरिदास।
नरसी भगत और जान लेव सूरदास॥
रामानन्द नानक कबीर और तुलसीदास।
गुरु से बडे अगार॥ऐसी॥३

भ्रम स्वरूप भवसिंधु है अथाह भरो।
गुरु के बिना जीव बीचही में डूब मरो॥
बिना गुरु ज्ञान भवसिंधू नहि जाय तरो। जी॥
दरिया में नाव कर्ण धार ज्यो लगावे पार।
केवट अनारी होय बोर देय बीच धार॥
त्यों भवसिंधु बीच सदगुरू खेवन हार।
सदगुरु कृपा अपार॥ऐसी॥४

धाम धनी देवचन्द्र और श्री प्राणनाथ।
गुरु भये दयाल जी सेवक को कियो सनाथ॥
दोऊ कर जोर गुरु चरण पे नवाऊँ माथ। जी॥

किन्हीं गुरु दाया तारतम्य को सुनाय दियो।
अक्षरातीत पारब्रह्म को लखाय दियो॥
लिखत विशाल गुरु पदरज धार लियो।
भई निर्मल बुद्धि हमार॥ऐसी॥५

पद नंबर - 27 सांगीत

ब्रज में प्रकटे नन्द कुमार॥ऐसे॥टेक॥
भादौ मास रैन अधियारी रिमझिम पड़त फुहार॥

भादौ का महीना कृष्ण अष्टमी शुभ सार।
रोहिणी नक्षत्र शुभदिन जानो बुधबार॥
अर्ध रात बीच कृष्ण प्रकट भये कारागार। जी॥
देवकी वसुदेव दोऊ बंधे बीच कारागार।
दियो दर्श विष्णु निजरूप चार भुजाधार॥
पूर्व जन्म को सब हाल तो सुनाया सार।
हम होंगे पुत्र तुम्हार॥ऐसे॥१

दो भुज स्वरूप शिशु प्रकटे इत आय।
गोकुल में शीघ्र आप देना तेहि पहुँचाय॥
मारग माहि तुम नाहि कछु विघ्न आय। जी॥
यशुदा के कन्या जो प्रकटी है माया आय।
लाल को लिटाय और बालिका को साथ लाय॥
पहिले की भांति पुनि बंधन में होना आय।
आज्ञा करी विचार॥ऐसे॥२

आयसु सुनाय पुनि विष्णु हुये तिरोधान।
तेजपुंज भारी एक प्रकटो तहाँ आन॥
लीला अवलोकन को अक्षर चित्तवृत्ति ध्यान। जी॥

आवेश पूर्णब्रह्म तेहि वृति पर विठाओ मान।
ताही को प्रकाश मनु कोटिन उगे है मानु॥
दो भुज स्वरूप शिशु ऐसे आये लेव मान।
प्रकटे जेल मंझार ॥ऐसे॥३

दो भुज स्वरूप ले प्रकटे गौलोक नाथ।
ताहि में विलीन हुये विष्णु बैकुण्ठ नाथ॥
देख वसुदेव ताहि रुप को नवयो माथ। जी॥
सूप में उठाय पुनि गोकुल को चले धाय।
जमुना धसत वसुदेव रहे भय खाय॥
बाढो जल देख कृष्ण चरण दियो छुआय।
भये जमुन जल पार ॥ऐसे॥४

बालि का उठाय पुनि लाल को उठाय लियो।
मथुरा का पंथ ले शीघ्रहि पयान कियो॥
जेल बीच आय पुनि बन्धन स्वीकार कियो। जी॥
रोई जो कुमारी सोई जाग पड़े पहिरे दार।
जानो न हाल कुछ कहा कियो करतार॥
लिखत विशाल श्री कृष्ण चरण चितधार।
सेवक शरण तुम्हार॥ऐसे॥५

पद नंबर - 28 सांगीत

दीन्ही घूम मचाय ऐसी। ॥टेक॥
अत्याचार कंस के कारण धरा रही अकुलाय॥

तात उग्रसेन से है छीन जाने राज्य लियो।
वसुदेव देवकी को कारागार डार दियो॥
देवकी के पुत्र मार घोर अपराध कियो। जी॥

विप्र सुर संत जन रहे घोर दुख पाय।
बन्द किन्हें यज्ञ नही प्रभु गुण गाय॥
असुर समाज को रहो जग जोर छाय।
पाप रहो हैं छाय॥ऐसी॥१

असह भयो भार तब धरा गौ रुप धार।
विध सो जाय जाने करुणा करी पुकार मार॥
करो दूर मेरो विनय यह बार बार। जी॥
पृथ्वी को संग ले देवन समाज साथ।
क्षीर सिन्धु जाय नारायण को नायो माथ॥
विनय करी बार बार धरा को करो सनाथ।
देवो कष्ट मिटाय॥ऐसी॥२

कही नारायण लेना होयगो सहारा मोय।
कौन बड़ा आपसे हे नाथ तो बतावहु मोय॥
देवन को साथ ले ऊर्ध्द लोक चले सोय। जी॥
बाबन बन विष्णु ने जब ऊर्ध्द लोक नाप लियो।
वाये पैर नख से फोड़ ब्रह्मांड दियो॥
ताहि पंथ सबने जाय ब्रह्मांड पार कियो।
आगे पहुँचे जाय ॥ ऐसी॥ ३

सीमा गौलोक की पहुँचे जब सब जाय।
पहरे पर गोपी जाने लीन्ही सबै अटकाय॥
पता तो बतावहु मोको आगे तब पंथ पाय। जी॥
कौन ब्रह्मण्ड में निवास तो तुम्हारा होय।
आगे तब जाव यह हाल तो बतावहु मोय॥
हुये सब मौन नाहीं देवे जबाब कोय।
गोपी रही मुस्काय॥ऐसी॥४

बड़ के नारायण तब गोपी को जबाब दियो।
वाये पैर नख विष्णु फोड़ ब्रम्हांड दियो॥
ताहि ब्रह्मण्ड हम सबने निवास कियो। जी॥
उत्तर लियो पास तब आगे को पंथ दियो।
सहित समाज पुनि पुनि आगे को पयान कियो॥
लिखत विशाल गुरु चरणन चित्त दियो।
प्रभु से आस लगाय ॥ऐसी॥५

पद नंबर - 29

देखत छबि गोलोक सुहाई॥टेक॥

सुर विरंच नारायण संग में सब गौलोकहि जाई।
विरजा नाम बहे जहाँ सखि निर्मल जल छबि पाई॥१
सरिता बिच ब्रह्माण्ड असंखन लुड़कत पडे दिखाई।
उनको बता समी सेवन को भ्रम को दियो मिटाई ॥२
पहुँचे दिव्य धाम में जाकर लख सोभा हर्षाई।
कोटन सूर्य प्रकाश अपारा जगमग भूमि सुहाई॥ ३
रतन जड़ित सोहत सिहांसन मणि मोती छवि पाई।
तापर युगुल स्वरूप विराजे राधा कृष्ण सुहाई॥ ४
किन्ह प्रणाम जाय नारायण देवन के सह माई।
आने का कारण हरि पूछो हाल कहो समुझाई॥ ५
बोले क्षीरसिन्धु नारायण हाथ जोर सिरनाई।
अत्याचार कंस के कारण धरा रही अकुलाई॥ ६
मेरे बस का काम नही हैं असुर अजय बर पाई।
बिना गोलोक बिहारी को यह कष्ट मिठाई॥ ७

सुन बिनती श्री कृष्ण कही तुम जावो भवन सिधाई।
निज निज अंश रूप पृथ्वी पर जन्म लेव सब जाई॥८

गोलोक से सब सामग्री ब्रज आवेगी भाई।
गोपी ग्वाल स्वशक्ति मैं गिर कानन अरु गाई॥ ९

हरिहौ आय कष्ट पृथ्वी का हनौ असुर को आई।
लिखत विशाल पाय गुरु दाया प्रभु से ध्यान लगाई॥१०

पद नंबर - 30

लखायो गुरु ने पार ब्रह्म को धाम॥टेक॥

ऊपर पितर लोक को जानो तेहि पर स्वर्ग मुकाम।
ताके ऊपर मेहेरलोक हैं धर्म राज केहि ठाम॥ १

ता ऊपर जनलोक विराजे पुनि तपलोक सुधाम।
ता आगे बैकुण्ठ विराजे चार मुक्ति पद धाम॥ २

आठ आवरण ताके आगे पुनि ओंकार मुकाम।
तेहि ऊपर गायत्री सोहे चार वेद कर ठाम॥ ३

पुनि महत्त्व लखो तेहि ऊपर सात सुन्य स्थान।
ताके आगे आदि नारायण महाविष्णु केहि धाम॥४

महा सून्य ताके पर जानो क्षर समिष्ट तेहि नाम।
यहाँ तक होत विनाश सबोका महाप्रलय केहि काम॥५

ताके ऊपर ओंकार हैं सब जीवो का ठाम।
पुनि है ज्ञान शक्ति गायत्री स्वसंवेद कर धाम॥ ६

ताके ऊपर कालनिरंजन सात सुन्य पुनि ठाम।
अनहद घुनी का केन्द्र यही है अजपा जाप मुकाम॥७

ताके ऊपर सत्यलोग है जो कबीर का धाम।
हंस रूप बिहरे बहु सखियां सत्यपुरुष के धाम॥८

गौलोक प्रतिबिम्ब लखो पुनि बृन्दावन धाम।
ताके ऊपर शक्ति सुमंगला चिदानन्द कर ठाम॥ १

पुनि गौलोक अखण्ड बृन्दावन पुनि सबलिक का ठाम।
तापर केवल ब्रह्म कहावे पुनि अक्षर केहि धाम॥१०

सर्वातीत सबन से पारा सर्वोत्तम परमधाम।
होल विशाल प्रकाश अपार नही माया को काम॥११

पद नंबर - 31

सन्तों कृष्ण नाम गुण खान॥टेक॥

कृष्ण नाम की अपार महिमा को कर सके बखान।
जाको वेद अगम कह गांवे कर मेद न कोई जान॥१

वर्णन करत सहस मुख हारे थकी शारदा मान।
शंकर से ध्यानी पचहारे धरत उन्ही का ध्याना ॥२

गुरुओं के गुरु गणेश हारे कर न सके गुणगान।
हारे व्यास करत गुण वर्णन बहुतक रचे पुरान॥ ३

नारद जी शुक सनिकादिक हारे धरत रहत नितध्यान।
वर्णन करत कृष्ण गुण हारे लक्ष्मीपति भगवान॥४

गायत्री वेदन की माता सोऊ न सकी बखान।
ओंकार नारायण हारे अगम कृष्ण गुण गान॥ ५

प्राणनाथ सद्गुरु इत आये मेट दिया अज्ञान।
महिमा बरणी कृष्ण नाम की प्रकट भयो निजनाम॥६

जपे प्रेम से कृष्ण नाम जो हुए जावे कल्यान।
दीन विशाल अन्त हुए मुक्ति पावे पद निर्वान॥ ७

पद नंबर - 32

जागो खोज खोज गए हार ऐसा पूर्ण ब्रह्म अपार ॥ टेक ॥

ब्रह्म लोक ब्रम्हा तप कीन्हो बरसे साथ हजार।
गम न पाई पारब्रह्म की कीन्हो बहुत विचार॥ १

शंकर से ध्यानी पचिहारे धरत ध्यान हर बार।
ज्ञानी शुक व्यास से हारे पाई न इन पार॥ २

पार ना पाई सनकादिक ने गए तप कर-कर हार।
भृगु, वशिष्ठ नारद से हारे कीन्हे यतन हजार॥ ३

नारायण अरु विष्णु देखो जो जग पालनहार।
इनहूं परम पुरुष नहीं पायो संतो करो विचार॥ ४

पार कबीरहु ने नहि पाई समझ लेव चितधार।
हद बेहद के बीच अधर में किन्ह कबीर बिहार॥५

कोटि यतन कर-कर सब हारे न पाई कोई पार।
प्राणनाथ सद्गुरु इत आये खोले बन्द किबार॥ ६

क्षर अक्षर के पार लखायो परम पुरूष दरबार।
दीन विशाल कोटि रवि शोभा है जगमग उजियार॥७

पद नंबर - 33 सांगीत

काहे करत अभिमान ऐसो।॥टेक॥
बहुतक वीर भये दुनिया में मिट गयो नाम निशान॥

प्रियव्रत भूप चक्रवर्ती सम्राट भयो।
सात द्वीप नव खंड पृथ्वी पर राज्य कियो॥
सोऊ न रहे अन्त काल ने ग्रास लियो। जी॥

हरिश्चंद्र मोरध्वज सत्यव्रत धारी भये।
सगर दिलीप रघु आदि अनुधारी भये॥
परशुराम वीर अरु राम अवतारी भये।
रहे न सोऊ जान॥ऐसो॥१

वीर हिरण्याक्ष अरु हिरणा कुश भारी भये।
सहस बाहु बाणासुर सहस भुज धारी भये॥
शुम्भ अरु निशुम्भ रक्त बीज बलधारी भये। जी॥
कुम्भ कर्ण और मेघनाथ इन्द्रजीत भयो।
रावण सो वीर काल पाटी से बांध लियो॥
सोउ न रहे सब कुटुम्ब नशाय दियो।
मिट गयो नाम निशान॥ऐसो॥२

द्वापर में कंस विकराल भयो बलवान।
मुस्टिक चाणूर शल्य तोशल से देव ध्यान॥
काल ने गिरासो इन्हें मारो कृष्ण भगवान। जी॥
भीम बलवान देखो वीर गदा धारी भये।
अर्जुन और अभिमन्यु वीर धनुधारी भये॥
हांको रथ जिनको सारथी गिरधारी भये।
सोऊ तज गये प्रान॥ऐसो॥३

द्रोण अरु दुशासन कर्ण बलधारी भये।
वीर में श्रेष्ठ देखो भीष्म ब्रह्मचारी भये॥
वीर दुर्योधन कैसो ब्रज देह धारी भये। जी॥
बड़े बड़े वीर देखो काल ने ग्रास कियो।
जपो कृष्ण नाम काहे वर्था अभिमान कियो॥
लिखत विशाल कृष्ण चरणन चित्त दियो।
गुरु की कृपा महान॥ऐसो॥४

पद नंबर - 34 सांगीत

पूरण ब्रह्म अपार।ऐसो ॥टेक॥
सर्वातीत सबन से न्यारा सत्य पुरुष के पार॥

अगम पुरुष क्षर अक्षर के जानो पार।
ब्रह्मा अरु महेश जाय खोज-खोज गये हार॥
शारद गणेश शेष जाकी नाही पाई पार। जी॥
नारद अरु व्यास शुकदेव हू न पायो ताय।
अंगरा अगस्थ भृगु खोज खोज हारे जाय॥
धरत ध्यान सनिकादि नाही पायो ताय।
मिला न सतपद सार॥ऐसो॥१

पुलस्थ पुलह कृतु वशिष्टहू न पायो जान।
भृगु अरु कर्दम बड़े प्रेम से लगायो ध्यान॥
पाई न दधीच पार बीच मे तजे हैं प्रान। जी॥
कपिल देव दत्तात्रेय कीन्हो तप बार बार।
परशुराम लोमश अरु श्रृंगी रिष गये हार॥
वेद अरु पुराण शास्त्र खोज-खोज गये हार।
काहू न पाई पार॥ ऐसो॥ २

रामानन्द नानक कबीर खोज हारे ताय।
पायो न पार निराकार तो बतायो जाय॥
कोई साकार कोई निर्गुण बतावे ताय। जी॥
गोरख और सिद्धनाथ प्रेम से लगाई आस।
कीन्हे बहु यतन विष्णहु न पहुँचे पास॥
हारे सब पंथ अरु हारे कबीर दास।
पायो न प्रभु का द्वार॥ऐसो॥३

प्राणनाथ देवचन्द्र प्रकट कियो निजधान।
पर के परे पूरण ब्रह्म को लखायो धाम॥
क्षर और अक्षर नि:अक्षर के पार धाम। जी॥
रतन सिंहासन सोहे श्यामा जी वाम अंग।
बारह हजार सखी राज करे राज संग॥
लिखत विशाल जहँ जड़े हैं असंख्य नंग।
कोटि भानु उजियार ॥ऐसो॥४

पद नंबर - 35

चेतो रे चेतन्य चिता की हुय रही तैयारी॥टेक॥
बाल भये पलना में पौढ़े दूध पियो भर किलकारी।
तरुणाई तन में व्यापी तब धर आई सुंदर नारी॥ १
भूल गये तरुणी संग में न याद किये तुम गिरधारी।
ज्वानी गयी बुढ़ापा आवे नोटिस होने लगे जारी॥२
स्याही जाय सफेदी आवे नैन ज्योति जावे भारी।
डगमग नार हिले बूढेपन काया बिगड़ जाय सारी॥३
धन की तृष्णा तहू सतावे कुल कुटुम्ब सुत अरु नारी।
बिना भजन तीनो पन बीते आय गयी अंतिम बारी॥४
अन्त समय यमदूत आय के त्रास दिखावेगे भारी।
पुनि ले जाय नरक डारे तब करहौ हाहाकारी॥ ५
तासे मानो कही हमारी भजो कृष्ण को चितधारी।
दीन विशाल लिखत निजकरसो गुरु कृपा भई भारी॥६

पद नंबर - 36

चेतो रे चेतन्य खबर नहि तोको निजधर की ॥टेक॥

तुम हो वासना परमधाम की प्रिया परम् पुरुष की।
सो नहि खबर तुम्हें सब भूली सुधि बुधि मूलवतन की ॥१

कारण मूल रचो यह कारज इच्छा बढ़ी सखिन की।
तासे ब्रह्म सृष्टि जग आई देखन नकल जगत की ॥२

प्राणनाथ श्री देवचन्द्र जी कृपा भई दोऊ जनकी।
ब्रह्म सृष्टि को आय जगायों आज्ञा पाय धनी की ॥३

तारतम्य तुम्हरे हित आयो देने खबर बतन की।
दीन विशाल कहें कर जोरे छोड़ो हाट उगन की ॥४

पद नंबर - 37

संग न तेरे कोई चले ॥टेक॥

जा काया तूने मलमल धोई साबुन तेल मले।
अंत समय में यह भी छूटे अग्नि बीच जले ॥ १

धन अरु धाम कुटुम्ब सब छूटे जिनमें डूब मरे।
जो नारी तोय प्राणन प्यारी गृह तक संग चले ॥ २

घर के सब परिवार कुटुम्बी मरघट तलक चले।
बेटा भी कर्तव्य निभावे दे जलदान भले ॥ ३

इसके आगे भजन है साथी ताको भूल चले।
दीन विशाल शीश निज रखते सतगुरु पैर तले ॥ ४

परमहंस श्री युगल दास जी की जागनी श्रंखला

परमहंस श्री युगलदास जी, प्रकटे पुण्य धरा पर थे।
शतक अष्ट दस बुन्देलखण्ड में, वासी दतिया नगर के थे॥

जन्म विषय में सदा आपके, जीवन बीतक मौन रही।
लिखूँवही जो सन्त जनो के, मुख से वाणी गया कही॥

श्री वास्तव कायस्थ कुली में, ब्रह्मवासना प्रकट हुई।
भद्रावती पुण्य नगरी में, शादी हो ससुराल हुई॥

धर्म परायण पतिव्रता थी, पत्नी श्री सबूर बाई।
कोख पवित्र इन्ही से देखो, प्रकटे प्रिया दास भाई॥

थे पटवारी जमीदार के, तीक्षण बुद्धि प्रवीण रहे।
एक संत की परख द्वारा, युगुला सखि तुम कहे गये॥

उच्च विचार हुए आपके, जीवन काया पलट गई।
छोड दई पुनि आप नौकरी, कृष्ण चरण दृढ भक्ति भई॥

दर्शन दे श्री प्राणनाथ जी, श्री निजनाम प्रदान किया।
हुये पवित्र धन्य-धन्य देखो, कृष्ण चन्द्रजी दरश दिया॥

कमलावती की ब्रह्मवासना, आप अपनी पहिचानी।
होते दर्शन परमधाम के, प्रकट भयी वतनी वानी॥

तपोभूमि भाण्डेर नगर में, सदा साधना मगन रहे।
श्री प्राणनाथ के संदेशों पर, धर्म दूत बन डटे रहे॥

धर्म प्रसारण हेतु आपने, किया ग्रन्थ रचनाओं को।
जगा दिया संगीत लहर से, सोई ब्रह्मप्रियाओं को॥

राजाओं में सम्मान पात्र बन, उत्तम आभा चमक गई।
आपही की झाँसी की रानी, शिष्या लक्ष्मी बाई भई॥

हुऐ अनेको शिष्य आपके, चेतन चतुर प्रवीन हुए।
ज्ञान प्रकाश ग्रन्थ रच चेतन, जन मानस के चन्द्र हुए॥

दास बिहारी शिष्य आपके, वाणी बुद्धि विशारद थे।
परमहंस श्री हीरा दास जी, चरचनी ज्ञान सुनायक थे॥

परमहंस श्री जीवन दास महाराज, आपके शिष्य भये।
करते भ्रमण जो यमुना के तट, पारौली के निकट गए॥

सुंदरता लख यमुना तट की, आश्रम यहां बनाया था।
श्री कल्याण दास को यहां पर, जीवन शिष्य बनाया था॥

शिष्य हुए कल्याण दास के, देखो चतुरदास महाराज।
जनपद इटावा मध्य जागनी, लाये ब्रह्म प्रियन के काज॥

जागृति कर श्री स्वरूप दास को, सौप जागनी कार्य दिया।
इसी जागनी मध्य अनोखा, गजराज दास ने काम किया॥

चमत्कारिक लीलाओं द्वारा, जनमानस को जगा दिया।
मोहन दास गोविंद दास ने, जागनी में सहयोग किया॥

इन्हीं गजराज दास के देखो, हुए शिष्य बर मोती दास।
इटावा मध्य बराहार में, जिनका रहा सदा ही वास॥

उत्तम वंश दीक्षित कुल में, पितु बल्देव प्रसाद सुनाम।
लगन रही नितराज चरण में, जपा प्रेम से श्री निजनाम॥

श्री गजराज दास गुरुवार की, इन पर कृपा विशेष रही।
अनुभव ज्ञान पाय बन मोती, सीप स्वांत चरितार्थ भई॥

संगीत प्रेमी रहे आप श्री, सुंदर पद अनेक रचकर।
भजन पच्चीसी ग्रंथ आपने, जनमानस हित छपवाकर॥

इन्हीं गजराज दास के देखो, हुए शिष्य बर मोती दास।
इटावा मध्य बराहार में, जिनका रहा सदा ही वास॥

उत्तम वंश दीक्षित कुल में, पितु बल्देव प्रसाद सुनाम।
लगन रही नितराज चरण में, जपा प्रेम से श्री निजनाम॥

श्री गजराज दास गुरुवार की, इन पर कृपा विशेष रही।
अनुभव ज्ञान पाय बन मोती, सीप स्वांत चरितार्थ भई॥

संगीत प्रेमी रहे आप श्री, सुंदर पद अनेक रचकर।
भजन पच्चीसी ग्रंथ आपने, जनमानस हित छपवाकर॥

मुक्ति हेतु मुक्ति सागर, ग्रंथ दूसरे की रचना।
दे साहित्य जागनी लाये, पूर्ण किया अपना सपना॥

इन्हीं पूज्य गुरु जी मोतीदास के, वर्तमान में शिष्य 'विशाल'।
दूजे शिष्य राजसेवक जी, संत वेश धारो तत्काल॥

हुये संत श्री दयाल दास जी, जो वृन्दावन रहे विराज।
संत दास के प्रपौत्र शिष्य, जानो परम लाट महाराज॥

जनपद इटावा मध्य पृथ्वीपुर, पावन ग्राम सुहाई है।
परमहंस श्री लाट नाम से, आप प्रसिद्धि पाई है॥

उनके परम शिष्य 'परमानन्द', संत शिरोमणि परम उदार।
वर्तमान जागनी कारण में, लीन्हा है अपने सिर भार॥

युगुल दास शिष्य धरा में, लीजे इन्हें सूर्यवत मान।
किया कठिन संघर्ष आपने, कीन्हा जागनी कार्य महान॥

कठिन परिश्रम किया आपने, दीन्हा है साहित्य अपार।
इन्ही सभी ब्रह्ममुनियों पर, विशाल हो पुनि-पुनि बलिहार॥

पद नंबर - 40

सखीरी अब चलहु राज दरबारा।टेक॥

सात पताल सात स्वर्ग ऊपर है बैकुण्ठ बिहारा।
आठ आवरण ओंकार पुनि गायत्री के पारा॥१

सात सुन्य महतत्व के आगे, आदि नारायण पारा।
महाशून्य अरु काल निरजंन सत्य पुरुष से न्यारा॥२

श्वेत द्वीप अव्याकृत अड़ागे सुमंगला शक्ति निहारा।
पुनि अखण्ड़ गौलोक निहारो, वृन्दावन तेहि पारा॥३

सबलिक केवल पार लखो, पुनि अक्षर ब्रह्म बिहारा।
परमधाम पुनि ताके आगे, कोटि भानु उजियारा॥४

सात घाट यमुना जी पारा, चाँदनी चौक निहारा।
सौ सीढ़ी चढ़ ऊपर जइये, पूरब दीरघ द्वारा॥५

चारहु हार हबेली हुय के, चौसठ खम्भ निहारा।
कंचन रंग सिंहासन सोहे, तापर युगुल बिहारा॥६

झिलमिल ज्योति करें सिंहासन, शंख भानु उजियारा।
दया शंकर की आस राजसों, पावें नित्य दीदारा॥७

पद नंबर - 41

साधु भाई निज दश खण्ड निहारा॥टेक॥

प्रथम भूमिका मूल मिलावा सिंहासन सुगम बिहारा।
श्यामा राज बिराजे तापर सखियां बारह हजारा॥ १

भूल भुलवनी भोम दूसरी दर्पण रग विस्तारा।
द्वादश सहस सुशोभित मन्दिर शोभा अधिक अपारा॥२

तीजी भोम भोग की लीला बड़ पडसाल बिहारा।
पशु पक्षी नित दर्शन पावें अक्षर आय निहारा॥ ३

चौथी भोम नृत्य की लीला नवरंग सखि केहि प्यारा।
श्यामा राज विराजे आसन मधुर बांध झनकारा॥ ४

भूमि पांचवी शयन की लीला प्रवाल मंदिर न्यारा।
छठवीं भोम सुखपाल विराजे देखो निहारा॥ ५

भोम सातवीं पड़े हिंडोला सोहत बारह हजारा।
दो-दो झूलन ताली लागे होवत शब्द अपारा॥ ६

आठवीं भोम में लागे झूला संख्या सहस अठारा।
श्यामा राज सखी मिल झूले सांकर केहि झनकारा॥७

नवीं भूम है दूर दशिका चारहु दिशन निहारा।
दर्शन होते परमधाम के चारों ओर निहारा॥ ८

दशवी भोम खुली चांदनी बाग बगीचा प्यारा।
देख दयाशंकर सुख पावे हृदय हरष अपारा॥ ९

प्रणाम जी

श्री कृष्ण प्रणामी परमानन्द धाम

इकदिल इटावा

द्वारा प्रकाशित साहित्य

परमानन्द पुष्पांजलि	20.00
राज पुष्पांजलि	20.00
सेवा पूजा पुष्पांजलि	25.00
श्री कृष्णानन्द सागर (ग्रन्थ)	250.00
परमानन्दम्	10.00
दिग्दर्शिका	नि:शुल्क
सेवा पूजा नित्य पाठ	25.00
चालीसा संग्रह	10.00
सेवा पूजा नित्य पाठ	25.00
श्री कृष्ण काव्यांजलि	25.00

प्रणाम जी

Shri Krishna Pranami Parmanand Dham

Ekdil Etawah U.P. India

अर्न्तराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त अध्यात्म तत्ववेत्ता

योग एवं भागवताचार्य परमपूज्य

स्वामी श्री परमानन्द जी महाराज

9837809898, 9548861410, 9927401140, 8218710272

Download Android App On Google Play Store -

Parmanand Dham

FaceBook, Twitter, Instagram, YouTube

Parmanand Dham